राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली • मंगलवार • 17 सितम्बर • 2024
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

असफलता का मौसम, सफलता के बीज बोने के लिए सर्वश्रेष्ठ समय होता है

-परमहंस योगानंद

इस्तीफे का पैंतरा

जेल से छूटने के महज दो दिन बाद ही मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने पद से इस्तीफे का दांव चल कर सभी को चकित कर दिया। चौंकाने वाली बात यह भी है कि उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया भी अब अपने पद पर नहीं रहेंगे। स्वाभाविक है कि दिल्ली की जनता को हो सकता है आज नया मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री मिल जाए। बहरहाल, केजरीवाल के इस पैंतरे से राज्य की सियासी सरगर्मी तेज हो गई है। यही नहीं पड़ोसी राज्य हरियाणा में होने वाले विधानसभा चुनाव पर भी इसका असर पड़ेगा। गौरतलब है कि केजरीवाल को अदालत ने कई सारी कड़ी शर्तों के साथ जमानत पर रिहा किया है। लाजिमी है कि केजरीवाल के लिए ये शर्तें काफी असहज करने वाली रही और मुख्यमंत्री पद से हटने के पीछे यह भी एक प्रमुख वजह हो। हाल के वर्षों में केजरीवाल सरकार के सामने कई समस्याएं दरपेश हुईं। इनकी आम आदमी पार्टी के कई विधायक और मंत्री गिरफ्तार हुए। घोटालों के अनगिनत आरोप केजरीवाल सरकार के खिलाफ लगाए गए। मगर हर बार पार्टी इन सबसे पार पाकर आगे बढ़ती रही। एक समय ऐसा भी आया जब हाल ही में संपन्न लोक सभा चुनाव में उन्हें दिल्ली में कांग्रेस का साथ मिला। हालांकि अब ये गठबंधन टूट चुका है, चुनावे पार्टी को अकेले दम पर न केवल अपने मजबूत किले दिल्ली को बचाना है बल्कि दूसरे राज्यों में भी अपना प्रसार प्रभावी तरीके से करना है। वैसे, यह काफी चुनौतीपूर्ण काज है। इसकी वजह यही दिखती है कि पार्टी लगातार अंदरूनी और बाह्य चुनौतियां का सामना कर रही है। उसके लिए इस वक्त अपनी ताकत, एकजुटता और विपक्ष की घेरेबंदी से बिना किसी इंझट के निकलना बेहद जरूरी है। अगर पार्टी ऐसा कर पाती है तो निःसंदेह वह मनोवैज्ञानिक तौर पर विपक्ष पर हावी हो सकती है। वैसे केजरीवाल का इस्तीफा देने का ऐलान करना जितना चौंकाऊ है, उतना ही दिलचस्प नये मुख्यमंत्री की घोषणा की भी है। आम आदमी पार्टी निश्चित रूप से इस बात को लेकर फ्रिकमंद होगी कि पार्टी की कमान किसे दी जाए। चूंकि केजरीवाल ने नवम्बर में महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के साथ ही दिल्ली विधानसभा का चुनाव कराए जाने की मांग की है, लिहाजा पार्टी को इसके लिए भी मानसिक तौर पर तैयार होने की जरूरत है। अलबत्ता, फ्री बिजली और पानी के साथ महिलाओं को सरकारी बसों में मुफ्त यात्रा कराने का सरकार के निर्णय की भी आने वाले चुनाव में परीक्षा होनी है। क्योंकि अब सबकुछ जनता की अदालत में होना है।

झूठ पर नाराजगी

सुप्रीम कोर्ट ने दोषियों की समय पूर्व रिहाई सुनिश्चित करने के लिए वकीलों द्वारा अदालत के समक्ष तथा याचिकाओं में बार-बार झूठे बयान देने पर सुप्रीम कोर्ट ने नाराजगी व्यक्त की है। अदालत ने कहा कि हमारा विश्वास डगमगा जाता है। पिछले हफ्तों के दौरान छठवें या सातवें मामले में याचिका में स्पष्ट तौर पर दिए गए झूठे बयान पर पीठ ने कहा कि हमारी प्रणाली विश्वास पर काम कर रही है। जब हम सुनवाई कर रहे होते हैं तो बार के सदस्यों पर भरोसा करते हैं। एक मामले के दौरान अदालत को पता चला कि सजा में छूट का अनुरोध करते हुए रिट याचिका में झूठे बयान दिए गए। साथ ही झूठी दलीलें भी दी गईं। पीठ ने जुर्माना लगाने की बात करते हुए कहा कि याचिकाकर्ताओं को वकीलों की गलतियों के लिए दंडित नहीं कर सकते। पहले भी कई बार सुप्रीम कोर्ट वकीलों की कार्यप्रणाली पर नाराजगी व्यक्त कर चुका है। साल की शुरुआत में चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया ने एक वकील को लताड़ लगाते हुए कहा था कि यह कोर्ट प्लेटफॉर्म नहीं है, जो भी ट्रेन आई उसमें चढ़ गए। मगर वकीलों के बारे में प्रसिद्ध है कि मुवक्किल सही हो या गलत उसका वकील हमेशा उसके साथ होता है। वे अदालत के समक्ष झूटी दलीलें देकर या गलत साक्ष्यों के मार्फत याचिकाकर्ता को जीत दिलाने के आश्वासन देने को अपने पेशे से जोड़ते हैं। हालांकि सच तो यह भी है कि वकीलों द्वारा मुवक्किलों से भी झूठ बोला जाता है। अदालती कार्रवाई या नियमों से अनभिज्ञ आम व्यक्ति को ये विवेकानुसार ज्ञान देने से भी संकोच नहीं करते। मामलों को बिला-वजह लंबित रखने तथा तारीखों को बढ़ाते रहने से वाद निरंतर देखने में आते हैं। निचली अदालतों में जाते-जाते वकीलों के ये तेवर और भी बिगड़े नजर आते हैं। जो कई मामलों में जानते-बूझते अदालत का कीमती वक्त बर्बाद करते हैं। सबसे बड़ी अदालत की इस नाराजगी को उन्हें दिशा-निर्देश की भांति देखना चाहिए। यह बार एसोसिएशन का दायित्व है कि वह वकीलों को झूठ का सहारा लेने और गलत दस्तावेज देने से रोकने के सख्त निर्देश जारी करे। क्योंकि उनके इस कदम से अदालत का विश्वास तो डगमगा ही रहा है, आम आदमी का न्याय प्रणाली पर भरोसा भी कमजोर पड़ता जा रहा है। जिसे बनाए रखने के प्रति हम सब सामूहिक तौर पर जिम्मेदार हैं।

कहानी/ पुष्पेश कुमार पुष्प

सबसे सुंदर क्या है

एक बार एक कलाकार को संसार की सबसे सुंदर वस्तु का चित्र बनाने का मन हुआ। काफी सोच-विचार करने के बाद भी उसकी समझ में नहीं आया कि आखिर संसार की सबसे सुंदर वस्तु क्या है? वह धर्म गुरु के पास गया और बोला, 'महात्मन्! संसार की सबसे सुंदर वस्तु क्या है?'

धर्म गुरु मुस्कुराकर बोले, 'बच्स! संसार की सबसे सुंदर वस्तु है श्रद्धा। उस श्रद्धा का दर्शन तुम्हें प्रत्येक धर्मस्थल पर होगा। संसार में इससे सुंदर वस्तु और क्या हो सकती है?'

कलाकार धर्म गुरु के उत्तर से संतुष्ट न हुआ और वह आगे बढ़ गया। रास्ते में उसे एक नवविवाहिता मिली। उसने नवविवाहिता से पूछा, 'संसार की सबसे सुंदर वस्तु क्या है?'

नवविवाहिता मुस्कुराकर बोली, 'संसार की सबसे सुंदर वस्तु प्रेम है; प्रेम निर्धनता में भी समृद्धि प्रतीत होती है। प्रेम खारे आंसुओं को भी मीठा बना देता है। प्रेम से सुंदर इस संसार में कोई और वस्तु हो नहीं सकती है।'

इस उत्तर से भी कलाकार का मन संतुष्ट न हुआ। रास्ते में एक सैनिक मिला। वह उससे भी वही प्रश्न दोहराया।

सैनिक शांत स्वर में बोला, 'संसार की सबसे सुंदर वस्तु शांति है। शांति से बढ़कर इस संसार में सुंदर और क्या हो सकती है? युद्ध तो संसार की सबसे कुरूप वस्तु है। मेरे विचार से तो शांति ही संसार की सबसे सुंदर वस्तु है।

कलाकार ने तीन वस्तुएं समझ ली-'श्रद्धा, प्रेम और शांति।' वह सोच्ता-विचारता घर की ओर चल पड़ा। दरवाजे पर पहुंचते ही सामने उसके बच्चे और पत्नी दौड़ पड़ी। बच्चे उससे लिपट पड़े और पत्नी मुस्कान बिखेरने लगी।

कलाकार सोचने लगा-'मैं संसार की जिस सबसे सुंदर वस्तु की खोज में निकला था, वह तो मेरे घर में ही है। मेरे बच्चों की आंखों में श्रद्धा है। पत्नी की आंखों से प्रेम की वर्षा हो रही है और मेरा यह घर तो शांति की दिव्य भूमि है।'

कलाकार तुरंत काम में लग गया। उसने संसार की सबसे सुंदर वस्तु का चित्र तैयार कर लिया और उसका शीर्षक दिया-'घर'।

देशहित में तो कतई नहीं

राहुल गांधी की अमेरिका यात्रा पर मचा बवंडर बिल्कुल स्वाभाविक है। विपक्ष का नेता बनने के बाद राहुल गांधी की यह पहली विदेश यात्रा थी। राहुल गांधी के लिए देश के हितों के प्रति सतर्क एवं उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार करने वाले नेता के रूप में स्वयं की छवि निर्मित करने का महत्त्वपूर्ण अवसर था। ओवरसीज कांग्रेस ऑफ इंडिया के प्रमुख सैम पित्रोदा ने कहा दिया था कि राहुल गांधी की विपक्ष के नेता के रूप में नहीं निजी यात्रा है। क्या लोक सभा में विपक्ष का नेता या संवैधानिक दायित्व निभाने वाला कोई व्यक्ति अपने सार्वजनिक वक्तव्यों के बारे में कह सकता है कि उस पद के द्वारा नहीं मेरा निजी विचार है क्योंकि मैं अपने अंदर दो चरित्र लेकर चलता हूं?

कार्यक्रमों में उनके दिए गए वक्तव्य हों या प्रश्नोत्तर या फिर मुलाकातें...कोई आयोजन ऐसा नहीं था जिसे सामान्य सहज रूप में स्वीकार किया जाए? भारत का नेता विदेश की भूमि पर जाकर यह कहे कि हमारे देश में चारों ओर भय का माहौल है, धार्मिक स्वतंत्रता पर हमला है, एक संगठन समूह को छोड़कर अन्यों को अपने मजहब, पंथ, संप्रदाय, भाषा के अनुसार और वेशभूषा के साथ निकालने या महत्त्वपूर्ण जगहों पर प्रवेश करने तक पर खतरा है अल्पसंख्यकों तथा समाज के पिछड़े व वंचित वर्गों के विरुद्ध हिंसा हो रही है विरोधी राजनेताओं को जेल में डाला जा रहा है तथा भारत की विविधताओं को समाप्त किया जा रहा है तो इसका अर्थ क्या लगाया जाए?

जब उनका कार्यक्रम पहले से तय था तो उन्हें क्या बोलना है इनका निर्धारण भी पहले हो गया होगा। 2017 से उनकी राजनीतिक विदेश यात्राएं हो रही हैं और अभी तक के उनके वक्तव्य को देखें तो आपको हैरत नहीं होगी। हर यात्रा में उन्होंने विश्व समुदाय के समक्ष भारत की एक झूठी डरावनी तस्वीर पेश की है। वे लगातार कहते रहे हैं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार आने के बाद आरएसएस का सारी संस्थाओं पर कब्जा है, हम विविधता को मानते हैं वे एकरूपता के लिए सत्ता की ताकत का उपयोग कर रहे हैं। इसी में वे जोड़ते रहे हैं कि समाज में दलितों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों और उनके विचार से असहमत होने वालों को हिंसा, प्रताड़ना और अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। सरकारी एजेंसियों का दुरुपयोग कर विरोधी नेताओं को जेल में डाला जा रहा है। संपूर्ण मीडिया पर कब्जा है और हमारे पास अपनी बात रखने के मंच नहीं हैं। लगभग ये ही बातें थोड़ी अलग या समान शब्दावलियों में उन्होंने इस बार भी बोला है। पिछले चुनाव में मोदी सरकार संविधान खत्म कर देगी आरक्षण समाप्त कर देगी का असर उन्हें दिखा इसलिए ये विषय भी प्रमुखता से उठाया। पिछले वर्ष की अमेरिका यात्रा में उन्होंने 'भारत जोड़ो यात्रा' के बारे में कहा था कि

जब हमारे पास अपनी बात रखने या जनसंवाद करने का कोई माध्यम नहीं बचा तो हम जनता के बीच यात्रा पर निकल पड़े। इस बार भी उन्होंने इसकी चर्चा की। इस बार अंतर इतना था कि उन्होंने बताया कि लोगों ने समझा है और चुनाव परिणाम ने इसे साबित किया है। अब नरेन्द्र मोदी से लोग डर गई हैं, सवाल पूछ रहे हैं और उनका आत्मविश्वास विश्वास खत्म गया है। वैसे यह बात भारत में वह बोल चुके थे।

राहुल गांधी के रणनीतिकार, सलाहकार, थिंक टैंक सब प्रफुल्लित होंगे क्योंकि जैसा वे चाहते थे राहुल गांधी पूरी तरह तैयार होकर देश के साथ विदेश में भी उतर चुके हैं। किंतु यह भूल गए कि एक बार अपने देश की छवि विदेशों में खराब कर दी तो यह केवल मोदी सरकार के लिए नहीं संपूर्ण भारत के लिए समस्या और चुनौती बनेगा। कल्पना करिए, जो संस्थाएं उभरते और खड़ा होते हुए भारत को रोकने के लिए झूठी रिपोर्ट के आधार पर विश्व के निरंकुश, अभिव्यक्ति और धार्मिक स्वतंत्रता का दमन करने वाले देशों की सूची में ढालने की वकालत कर रहे हैं उनके लिए तो राहुल गांधी को उद्धृत कर अपनी बात की पुष्टि करना ज्यादा आसान हो जाएगा। उनकी मुलाकातों की सूची में हमने भारत विरोधी और वहां तक कि भारत के विरुद्ध अमेरिकी कांग्रेस में मतदान करने वाली इल्हान उमर की चर्चा है किंतु पूरी सूची में ऐसे ही लोग भी जो अल्पसंख्यकों, मुसलमानों, मानवाधिकारों आदि के नाम पर भारत विरुद्ध अभियान चलाते रहे हैं। इनमें पाकिस्तान समर्थक हैं। जरा सोचिए, कोई विदेशी नेता पाक अधिकृत कश्मीर को भारत का भाग नहीं मानता, कश्मीर में जनमत संग्रह की आवाज उठाता है तथा अमेरिका में भारतीयों के लिए वीजा नियमों को आसान करने वाले विधायक के विरुद्ध मतदान करता है उसका हमारे देश के किसी नेता के साथ खड़ा होने का अर्थ क्या है?

यह मोदी सरकार का विरोध है या भारत का? खालिस्तान की मांग सिखों की धार्मिक आजादी की मांग से जोड़ कर अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, बेल्जियम जैसे देशों में सिख फॉर जस्टिस या ऐसे दूसरे समूह बीच-बीच में भारत को परेशान करने वाली गतिविधियां करते हैं। क्या राहुल गांधी को पता नहीं कि इन तत्वों ने ही भारतीय दूतावास आदि पर हमले किए और महात्मा गांधी तक की मूर्ति को अपमानित किया? सिख फॉर जस्टिस का संचालक और भारत में वांछित आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू ने राहुल गांधी के बयानों को हाथों-हाथ लिया और कहा कि यही तो हम कह रहे थे, आज राहुल गांधी ने इसकी पुष्टि कर दी। राहुल गांधी ने भारत का पक्ष इस कमजोर किया। इसका उठावना पहलू यह है कि इसका किंचित भी लाभ उठाकर इन तत्वों ने पंजाब में कोई गड़बड़ी पैदा कर दी तो क्या होगा?

भारत की एकता-अखंडता तथा विश्व में इसके प्रभाव बढ़ने, सम्मान मिलने के प्रति समर्पित कोई नेता विदेशी भूमि पर इस तरह की बातें नहीं कर सकता। आपको आरएसएस, बीजेपी से मतभेद है तो देश के अंदर प्रकट कर सकते हैं। उसमें भी राहुल गांधी जी अतिवाद की सीमा तक जा रहे हैं जो हमारे अंदर ही तनाव और हिंसा बढ़ाने तथा उथल-पुथल मचाने की पर्याप्त क्षमता रखता है। साफ है कि राहुल गांधी का एजेंडा देश की सामान्य राजनीति में कांग्रेस को मजबूत करना या स्वयं सरकार बनाने तक सीमित नहीं है। अपने देश के बारे में ऐसे दुष्प्रचार पुराने समय में उथल-पुथल और हिंसा के द्वारा सत्ता पर कब्जा करने वाले वामपंथी विचार करते थे। राहुल गांधी संसदीय लोकतंत्र के अंदर क्या लक्ष्य चाहते हैं इसे समझने के लिए शोध की आवश्यकता है।

(लेखक के निजी विचार हैं)

राहुल के वक्तव्य

अवधेश कुमार

> राहुल गांधी जी अतिवाद की सीमा तक जा रहे हैं जो हमारे अंदर ही तनाव और हिंसा बढ़ाने तथा उथल-पुथल मचाने की पर्याप्त क्षमता रखता है। साफ है कि राहुल का एजेंडा देश की सामान्य राजनीति में कांग्रेस को मजबूत करना या स्वयं सरकार बनाने तक सीमित नहीं है। अपने देश के बारे में ऐसे दुष्प्रचार पुराने समय में उथल-पुथल और हिंसा के द्वारा सत्ता पर कब्जा करने वाले वामपंथी किया करते थे

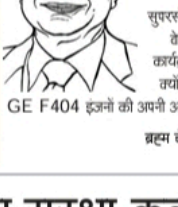

GE F404 इंजनों की अपनी आपूर्ति का लाभ उठा रहा है।

भारत सेकेंड-हैंड मिराज 2000 लड़ाकू विमान क्यों खरीदेगा जबकि भारत का अपना तेजस (सबसे हल्का सुपरसोनिक युद्धक विमान) कहीं बेहतर है। तेजस के उत्पादन कार्यक्रम में व्यवधान इसलिए है क्योंकि अमेरिका स्पष्ट रूप से

ब्रह्म चेलानी, सामरिक चिंतक
@Chellaney

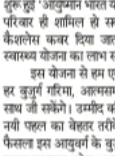

आयुष्मान योजना | ललित गर्ग

बुढ़ापे का स्वास्थ्य सुरक्षा कवच

केंद्र सरकार ने अब सत्तर साल से ऊपर के सभी वरिष्ठ नागरिकों को 'आयुष्मान भारत' योजना में शामिल करने का निर्णय लिया है। देश के करीब साढ़े चार करोड़ परिवार के छह करोड़ बुजुर्ग इस योजना के अंतर्गत मुफ्त इलाज करा सकेंगे। दरअसल, वर्ष 2018 में शुरू हुई 'आयुष्मान भारत योजना' में अब तक केवल गरीब परिवार ही शामिल हो सकते थे, जिन्हें पांच लाख का कैशलेस कवर दिया जाता था। अब इस सार्वभौमिक स्वास्थ्य योजना का लाभ सभी बुजुर्गों को दिया जाएगा।

इस योजना से हम एक ऐसी दुनिया बना सकेंगे जहां हर बुजुर्ग गरिमा, आत्मसम्मान, सुरक्षा और स्वस्थता के साथ जी सकेंगे। उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार की नयी पहल का बेहतर तरीके से क्रियान्वयन हुआ तो यह फैसला इस आयुवर्ग के बुजुर्गों की सेहत को लेकर सुरक्षा कवच का काम करेगा। यह जरूरत इसलिए भी महसूस की जा रही थी क्योंकि आने वाले बीस वर्ष में भारत की बुजुर्ग आबादी तीन गुना होने की संभावना है। नये भारत-विकसित भारत की उन्नत एवं आदर्श संरचना बिना बूढ़ों की सम्मानजनक स्थिति के संभव नहीं है। वर्तमान युग की बढ़ी विड़म्बना एवं विसंगति है कि वृद्ध अपने ही घर की दहलीज पर सहमा-सहमा खड़ा है, वृद्धों की उपेक्षा स्वस्थ एवं सुसंस्कृत परिवार परम्परा पर तो काला दाग है ही, शासन-व्यवस्थाओं के लिए भी लज्जाजनक है। इस फैसले की जरूरत इसलिए थी क्योंकि सामाजिक सुरक्षा के मामले में भारत बहुत पीछे है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे 2019-21 की रिपोर्ट से पता चलता है कि देश में ऐसे परिवारों की संख्या केवल 41 प्रतिशत है, जिनके कम से कम एक सदस्य का स्वास्थ्य बीमा हो। बिहार, महाराष्ट्र जैसे बड़ी आबादी वाले राज्यों में तो यह राष्ट्रीय औसत के करीब आधे के बराबर है। स्वास्थ्य बीमा को लेकर यह उदासीन रवैया हमारी उस आदत की वजह से है, जिसमें ज्यादातर लोग यह सोचते हैं कि जब बीमारी आएगी तो देखा जाएगा। बहुत से लोग जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा को एक ही चीज समझ लेते हैं, लेकिन जब बीमारी सिर पर आती है, तो पूरे घर के बजट को तहस-नहस एवं असंतुलित कर देती है। सरकार का मौजूदा कदम कई परिवारों को ऐसे आर्थिक दुष्चक्र में फंसने से बचा सकता है। भारत में इलाज दिनों-दिन महंगा होता जा रहा है। जब आय के स्रोत सिमट जाते हैं

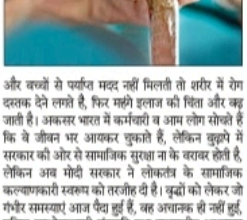

और बच्चों से पर्याप्त मदद नहीं मिलती तो शरीर में रोग दस्तक देने लगते हैं, फिर महंगे इलाज की चिंता और बढ़ जाती है। अकसर भारत में कर्मचारी व आम लोग सोचते हैं कि वे जीवन भर आयकर चुकाते हैं, लेकिन बुढ़ापे में सरकार की ओर से सामाजिक सुरक्षा ना के बराबर होती है, लेकिन अब मोदी सरकार ने लोकतंत्र के सामाजिक कल्याणकारी स्वरूप को तरजीह दी है। बूढ़ों को लेकर जो गंभीर समस्याएं आज पैदा हुई हैं, वह अचानक ही नहीं हुई, बल्कि उपभोक्तावादी संस्कृति तथा महानगरीय अधुनातन बोध के तहत बदलते पारिवारिक-सामाजिक मूल्यों, नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आने, महंगाई के बढ़ने और व्यक्ति के अपने बच्चों और पत्नी तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति के कारण बढ़े-बूढ़ों के लिए अनेक समस्याएं आ खड़ी हुई हैं। अब जब स्वास्थ्य बीमा का दायरा बढ़ाया गया है तो यह उम्मीद की जानी चाहिए कि खर्च को लेकर परिजनों का डर कम होगा। इस योजना का पूरा खाका सामने आना बाकी है, लेकिन यह सुनिश्चित तो करना ही होगा कि बीमा सुरक्षा कवच होने के बावजूद बुजुर्ग मुफ्त उपचार से वंचित न रह जाएं। खास तौर से सरकारी स्वास्थ्य बीमा योजनाओं को लेकर निजी अस्पतालों के रवैये को देखते हुए यह चिंता ज्यादा जरूरी हो जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के अनुसार भारत में औसत आयु 67.3 साल है। पिछले दो दशकों में ही औसत आयु में पांच वरस से अधिक का इजाफा हो चुका है। निश्चित ही यह अच्छी खबर है, लेकिन इसके साथ यह चिंता भी जुड़ी हुई है कि देश में दिल से जुड़े रोगों और डायबिटीज के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। अन्य रोग भी तेजी से बढ़ रहे हैं। अनुमान लगाया गया है कि भारत में 60 वर्ष से ज्यादा उम्र की जो आबादी वर्ष 2011 में 8.6 प्रतिशत थी, वह बढ़कर 2050 तक 19.5 फीसद हो जाएगी।

यह भी अनुमान है कि 2030 तक भारत में स्वास्थ्य देखभाल का 45 प्रतिशत खर्च बुजुर्ग मरीजों पर होगा। ऐसे में बुजुर्गों के सामने अनेक अन्य समस्याओं के साथ नई एवं असाध्य बीमारियां और उनका महंगा इलाज बड़ी समस्या है। ऐसी स्थितियों में अब इस योजना का लाभ सभी बुजुर्गों को दिया जाएगा। सरकार की ओर से बताया गया है कि जो सत्तर साल से अधिक के नागरिक प्राइवेट बीमा योजना या फिर राज्य कर्मचारी बीमा योजना का लाभ ले रहे हैं, वे भी नई योजना का लाभ लेने के अधिकारी होंगे। लेकिन उन्हें इस योजना के लिये आवेदन करना होगा। अस्पतालों की भीड़ के कारण बुजुर्गों के घर तक मोबाइल स्वास्थ्य जांच सेवा भी इस योजना में लागू हो तो सोने पर सुहागा हो सकता है। सरकार को भविष्य में बूढ़ों के लिये अलग से अस्पताल संचालित करने के बारे में भी सोचना चाहिए।

भगवान | ओशो

मत करो स्मरण! लेकिन जिसे तुम जानते हो, उससे पूरी तरह अस्तित्व तो हो जाओ। जहां तुम खड़े हो, उस जमीन को तो व्यर्थ समझ लो। तो तुम्हारे पैर अंतर से जाएंगे उस जमीन को खोजने के लिए, जहां खड़ा हुआ जा सके। जिस नाव पर तुम बैठे हो, उसे तो देख लो कि वह कागज की है। कोई फिक्र नहीं कि दूसरी नाव का हमें कोई पता नहीं है। और हमें कोई पता नहीं है कि कोई किनारा भी मिलने वाला है। हमें कोई पता ही नहीं है कि कोई और खिवैया भी हो सकता है, लेकिन यह नाव, जिस पर तुम बैठे हो, कागज की है या सपने की है, जरा नीचे इसकी तलाश कर लो। और जिस आदमी को पता चल जाए कि मैं कागज की नाव में बैठा हूं पता है वह क्या करेगा? कम-से-कम चीखकर रोका, चिल्लाएगा तो! पता है कि कोई सुनने वाला नहीं है, तो भी मैं कहता हूं यह चिल्लाएगा और रोएगा। कोई किनारा हो या न हो, और कोई निकट हो या न हो, उस स्वात निर्जन में भी उसका रुदन तो सुनाई ही पड़ेगा, उसके प्राण तो चिल्लाने ही लगेंगे, कि मैं कागज की नाव में बैठा हूं, अब क्या होगा? इस घटना से ही, इस विह्वलता से ही अचानक हृदय का एक नया यंत्र शुरू हो जाता है। हृदय में दो यंत्र हैं। वैज्ञानिक से पूछने जाएंगे, तो वह कहेगा, फेफड़े के अतिरिक्त हृदय में और कुछ भी नहीं है, फुफफुस है। पंपिंग सेट के सिवाय वहां कुछ भी नहीं है। वह सिर्फ श्वास को फेंकने और खून को शुद्ध करने का काम करता है। वैज्ञानिक से पूछने जाएंगे, तो हृदय जैसी कोई भी चीज नहीं है, फेफड़ा है, फुफफुस है, लेकिन शब्द हम सदा हृदय का उपयोग करते हैं, हालांकि हमारे पास भी फुफफुस है अभी, अभी हृदय नहीं है। हृदय उस फेफड़े का नाम है, जो दूसरे संसार में श्वास लेना शुरू करता है। यह फेफड़ा तो इसी संसार में श्वास लेता है, यही ऑक्सीजन और कार्बन डायआक्साइड के बीच चलता है। एक और भी ऑक्सीजन है, एक और प्राणवायु है, एक और प्राणवान जीवन है, जब वह शुरू होता है, तो इसी फुफफुस के भीतर एक और हृदय है, जिसमें नई श्वास और नई धड़कन शुरू हो जाती है। वह धड़कन अमृत की धड़कन है। तो दूसरी बात है, विह्वलता। और तीसरी बात है, समर्पण। पहली बात है, यह जो चारों तरफ है, यह व्यर्थ हो जाए, तो ही आंख उठेगी। आंख उठे, कुछ दिखाई न पड़े; बीच में आदमी अटक जाए तो विह्वलता पैदा होगी; घबड़ाहट पैदा होगी; एक बेचैनी पैदा होगी।

रीडर्स मेल

खत्म हो बंदूक संस्कृति

अमेरिका का रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप पर एक बार फिर हत्या का प्रयास हुआ है। दो महीने में दूसरी बार। हालांकि सुरक्षाकर्मियों ने हमलावर को गिरफ्तार कर लिया गया। अमेरिकी मीडिया आउटलेट्स ने संदिग्ध की पहचान रयान वेस्ले राउथ के रूप में की है। अब कम-से-कम दोनों प्रमुख पार्टियों को इस बात पर गंभीरता से विचार करना होगा कि क्या देश से बंदूक की संस्कृति को खत्म कर दिया जाए या उसे उसी तरह रहने दिया जाए। 2023 में सामूहिक गोलीबारी की रिकॉर्ड संख्या के मद्देनजर सख्त अमेरिकी बंदूक कानूनों की बढ़ती मांगों के बीच में अप्रैल 2023 में, बंदूक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए शक्तिशाली अमेरिकी संस्था नेशनल राइफल एसोसिएशन (एनआरए) ने इंडियानापोलिस में अपनी वार्षिक बैठक आयोजित की थी, जिसमें पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और फ्लोरिडा के गवर्नर रॉन डेसेंटिस ने भाग लिया था और सभा को संबोधित भी किया था। अब ट्रंप को ये बताना चाहिए की उन्होंने उस बैठक के दौरान राइफल एसोसिएशन के सदस्यों एवं पदाधिकारियों से क्या कहा था? मुझे लगता है वर्तमान चुनावी माहौल को खूनखराबा से दूर रखना है तो तुरंत देश में बंदूकों का उत्पादन, वितरण एवं बिक्री पर शिकंजा कसने का कानून पारित किया जाय। वरना आम अमेरिकियों का मरने का सिलसिला जारी रहेगा।

जंग बहादुर सिंह, जमशेदपुर

सबक कब लेंगे

मेरठ के जाकिर कॉलोनी में हुए हादसे में एक ही परिवार के दस सदस्यों की मौत ने कमजोर नींव पर बने मकानों की वास्तविकता उजागर कर दी। ऐसी घटनाओं के लिए केवल प्रशासन या नगर निगम को दोषी ठहरा कर नागरिक अपने दायित्वों से पल्ला नहीं झाड़ सकते। देश भर में बारिश के कारण जर्जर भवनों के धराशायी होने के अनेक समाचार प्रकाश में आते रहते हैं। इस हृदय विदारक घटना में दस लोगों की मौत उन लोगों के लिए सबक है, जो सुरक्षा मानकों की अनदेखी करके अपना जीवन दांव पर लगाए हुए हैं। लिहाजा, हमें इस घटना से सबक लेकर समाज में जागरूकता फैलानी होगी।

डॉ. सुधाकर आशावादी, मेरठ

इस्तीफे का दांव

भगत सिंह को अपना आदर्श बताने वाले केजरीवाल की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। आम आदमी पार्टी के मुखिया केजरीवाल ने जब से दिल्ली की मुख्यमंत्री के पद संभाला है तब से केंद्र व दिल्ली सरकार के बीच तनातनी खत्म नहीं हो रही है। अब जबकि आबकारी नीति घोटाले मामले में सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल को कई कठोर शर्तों पर जमानत तो दे दी है, लेकिन कठोर शर्तों के कारण केजरीवाल अब नाम मात्र के मुख्यमंत्री हो गए। सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें न केवल मुख्यमंत्री कार्यालय से जाने से रोका, बल्कि उपराज्यपाल की अनुमति के बिना किसी सरकारी फाइल पर हस्ताक्षर करने से भी रोक दिया। केजरीवाल को पहले ही अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए था, जब उन्हें आबकारी घोटाले में गिरफ्तार किया गया था। यह देखना दिलचस्प होगा कि इतने सियासी ड्रामे के बीच मुख्यमंत्री कौन होगा।

चंदन कुमार सिंह, सीवान
letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया अहमदी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा से मुद्रित तथा 706-708, सहारा हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित।
समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश सिंह*।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23362368, 23362369, 23362371, 23362372, फैक्स - 23362370, मुद्रण - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750
वर्ष-34, अंक 34
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कलापूर्ण सामग्री के लिए उत्तरदायी

सम्पादकीय

कश्मीर घाटी में खत्म होने के कगार पर आतंकी घटना, हकीकत कुछ और ही बता रही कहानी

जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को लेकर परस्पर विरोधी बातें सुनने को मिलती रही हैं। सरकार का दावा है कि अब वहां आतंकवाद खत्म होने को है। कुछ दिनों पहले गृह मंत्रालय ने दावा किया था कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद काफी कम हो गया है, अब केवल कुछ इलाकों तक सिमट कर रह गया है। जल्दी ही उसे समाप्त कर दिया जाएगा। प्रधानमंत्री ने भी यही बात दोहराई है। उन्होंने डोडा से विधानसभा चुनाव प्रचार की शुरुआत करते हुए कहा कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद अब अपनी आखिरी सांसें गिन रहा है। हालांकि प्रधानमंत्री के दौरे से पहले ही वहां आतंकी हमला हुआ, जिसमें एक अधिकारी समेत दो सुरक्षाकर्मी शहीद हो गए। सेना के जवाबी हमले में तीन आतंकवादियों को मार गिराया गया। घाटी में सक्रिय विपक्षी राजनीतिक दलों का आरोप है कि पिछले दस वर्षों में वहां आतंकी गतिविधियां बढ़ी हैं। बहुत सारे निरपराध लोग मारे गए हैं, अनेक सुरक्षाकर्मी शहीद हुए हैं। इससे पहले आतंकवादी घटनाएं इतनी नहीं होती थीं, केंद्र सरकार ने तब स्थानीय लोगों से बातचीत का सिलसिला शुरू किया था और आतंकी गतिविधियां काफी कम हो गई थीं। मगर सरकार इन बातों को सिरे से खारिज करती है। हालांकि दो वर्ष पहले गृह मंत्रालय ने भी माना था कि विशेष दर्जा खत्म होने और राज्य में कर्फ्यू के दौरान स्थानीय युवाओं की आतंकी समूहों में भर्ती बढ़ी है।

पहले नोटबंदी के समय दावा किया गया था कि इससे आतंकी समूहों की कमर टूट जाएगी। उन्हें वित्तीय मदद मिलनी बंद हो जाएगी। फिर अनुच्छेद तीन सौ सत्तर हटने के बाद कहा गया कि इससे दहशतगर्दी पर लगाम लग जाएगी। मगर हकीकत यह है कि करीब दो वर्ष तक सघन तलाशी और कड़ी पहरेदारी के बावजूद आतंकी घटनाओं पर कोई उल्लेखनीय अंकुश लगा नजर नहीं आया। फिर जैसे-जैसे यहां जनजीवन सामान्य बनाने के लिए कुछ ढिलाई दी जाने लगी, दहशतगर्दी एकदम से बढ़नी शुरू हो गई। आतंकवादियों ने अपने हमले के तरीके बदल लिए। कभी वे बाहरी लोगों और कश्मीरी पंडितों पर लक्षित हिंसा करने लगे, तो कभी सेना के काफिले पर घात लगा कर हमला। पिछले पांच वर्षों में थोड़े-थोड़े समय बाद सुरक्षाबलों पर घात लगा कर हमले बढ़े हैं। उन हमलों की समीक्षा से यह भी तथ्य सामने आया कि उनके पास बाहर से अत्याधुनिक हथियार पहुंचने लगे हैं, वे सुरक्षाबलों के सूचना तंत्र में सेंध लगाने के नए तरीके तलाश चुके हैं। ऐसे में यह सवाल बार-बार पूछा जाता रहा है कि आतंकी समूहों को वित्तीय मदद पहुंचाने वालों और बाहर से हथियार वगैरह मुहैया कराने वालों पर शिकंजा कसे जाने के बावजूद उन तक ये चीजें कैसे पहुंच जा रही हैं। केंद्र सरकार का शुरू से दावा रहा है कि वह घाटी में आतंकवाद समाप्त करके ही दम लेगी। इसके लिए निरसंदेह उसने सख्त कदम भी उठाए, सीमा पार से होने वाली घुसपैठ कम हो गई। मगर आतंकी घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रहीं, तो इसके पीछे बड़ा कारण है कि दहशतगर्दों को स्थानीय लोगों का समर्थन मिल रहा है और वहां के युवाओं को हथियार उठाने से रोका नहीं जा पा रहा।

सरकार के सरोकार, स्वरूप और समझौतों से संशय

इंडिया गठबंधन के घटक नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस का चुनाव पूर्व गठबंधन है। दोनों के क्रमशः 51 और 32 उम्मीदवार मैदान में हैं। नेकां के घोषणापत्र में अनुच्छेद 370 और 35ए की बहाली के साथ पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल कराने समेत 12 गारंटियां हैं। राजनीतिक कैदियों की रिहाई, जन सुरक्षा अधिनियम (पीएसए) निरस्त करने, छह महीन में एक लाख नौकरियां देने और भारत-पाकिस्तान के बीच बातचीत की पहल करने की बात कही गई है। महत्वपूर्ण बात यह भी कि यदि केंद्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर का राज्य का दर्जा बहाल नहीं किया तो सुप्रीम कोर्ट जाएंगे।

प्रतीक मिश्र

नए जम्मू-कश्मीर में दस साल बाद विधानसभा की 90 सीटों पर चुनावी गतिविधियां चरम पर हैं। अपनों की सरकार बनाने के लिए जम्मू के प्रवेश द्वार लखनपुर से कश्मीर के कंगन तक का अवाम उत्साहित है। नई सरकार में सुरक्षा, स्थिरता, समान विकास और समरसता ज्यादातर मतदाताओं का सपना है। सियासी दल इससे दत्तावे में हैं। सोच को साकार करने और सरोकार पूरा करने के लिए समीकरण साधे जा रहे हैं। सौमाएं समझते हुए संभावनाओं के हिसाब से कई खुले और गुप्त समझौते हो चुके हैं। एक ही विचारधारा के संगठनों में सहमति बन रही है। बावजूद इसके घोषित-अघोषित गठबंधन अपने-अपने हित में बहुमत की सरकार चाहते हैं। फिर भी नई सरकार के स्वरूप, केंद्र से समन्वय, संतुलन, स्थिरता और स्थानीय स्तर की स्वायत्तता को लेकर संशय हैं। संकल्पों, गारंटियों और घोषणाओं को पूरा करने के लिए सीमित संसाधन जहां सावधान करते हुए आने वाले दौर की समस्याओं का इशारा कर रहे हैं, वहीं पांच अगस्त 2019 को अनुच्छेद 370 हटाने से समाप्त पूर्ण राज्य के दर्जे की वापसी के केंद्र सरकार के आश्वासन पर क्रियान्वयन के सही समय का सवाल भी सहज और स्वाभाविक है।

भाजपा ने संकल्प के रूप में 25 सरोकार बताए हैं। इनमें पांच लाख नौकरियां, विद्यार्थियों को लैपटॉप, यात्रा के लिए तीन हजार रुपये और कोचिंग के लिए 10 हजार रुपये देने के अलावा मेडिकल कॉलेजों में एक हजार सीटें बढ़ाने का मंतव्य बेरोजगारी की समस्या पर ध्यान खींचता है। साथ ही मुफ्त पानी और बिजली के अलावा गरीबों को पांच मरला (125 गज) जमीन मुफ्त देने के अलावा किसानों को 10 हजार रुपये देने का वादा भी लुभावना है। वादों की आड़ में बड़े-बड़े दावे भी किए जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि अनुच्छेद 370 खत्म होने के बाद पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर (पीओजेके) पर दावा मजबूत किया गया है। यहां भुलाने की कोशिश की गई कि 22 फरवरी 1994 को पीवी नरसिंहराव की सरकार में संसद में पीओजेके को भारत का अभिन्न अंग बनाने का सर्वसम्मत संकल्प पारित किया गया था, जिसे 30 साल हो चुके हैं। इसी क्रम में जम्मू से कश्मीर का सफर 14 घंटे से चार घंटे में बताया जा रहा है। तथ्य यह कि सड़क मार्ग से जम्मू से श्रीनगर पहुंचने में पहले आठ घंटे लगते थे। अब यह यात्रा लगभग पांच घंटे में पूरी हो रही है।

जानना जरूरी है कि अनुच्छेद 370 हटाने से संबंधित याचिकाओं की सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने भी राज्य का दर्जा छीनने पर सवाल उठाए थे। शीर्ष अदालत ने ही 30 सितंबर तक चुनाव कराने का निर्देश दिया था। कांग्रेस की गारंटियों में पूर्ण राज्य का दर्जा दिलाना तो है ही, एक लाख खाली सरकारी पद भरने, हर नागरिक का 25 लाख रुपये तक के स्वास्थ्य बीमा के अलावा कश्मीरी पंडितों के पुनर्वास के लिए पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की योजना को आगे बढ़ाने का वादा है। 2014 के बाद भाजपा के साथ सरकार बना चुकी पीडीपी ने 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली, पानी पर टैक्स खत्म करने, गरीबों को रसोई गैस के 12 सिलेंडर देने की घोषणा की है।

जाहिर है कि नई सरकारों के लिए अपने वादों को अमली जामा पहनाने के लिए बड़ी धनराशि की जरूरत होगी। केंद्र शासित प्रदेश के संसाधन सीमित हैं। जम्मू-कश्मीर में आर्थिक स्थिति बेहतर बनाने के सरकार के दावे के उलट यहां देनदारियां बढ़ी हैं। संसद द्वारा स्वीकृत 2024-2025 के बजट में बताया गया है कि केंद्र शासित प्रदेश की देनदारियां 2019-2020 में 83,573 करोड़ रुपये से बढ़कर 2022-23 में 1,12,797 करोड़ रुपये हो गई हैं (2020-2021 में देनदारियां 92,953 करोड़ रुपये थीं, जो 2021-2022 में 1,01,462 करोड़ रुपये और 2022-2023 में 1,12,797 करोड़ रुपये तक पहुंच गई। हालांकि जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा प्रदेश के कर्ज मुक्त होने का दावा कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि कर्ज और सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) के बीच उचित अनुपात बना हुआ है। दूसरी ओर जानकार मानते हैं कि नई सरकार बनने के बाद होने वाले खर्च से सरकारी खजाने पर अचानक बोझ बढ़ेगा और आमदनी के साधन इसी तरह से नहीं बढ़ाए जा सकेंगे, क्योंकि लोकप्रियता के लिए सरकारें कर्ज लेने से परहेज नहीं करतीं हैं।

नई सरकार के स्वरूप के राजनीतिक के अलावा सांविधानिक कारण भी हैं। जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन कानून के अनुसार विधानसभा की 90 सीटों पर सीधा चुनाव होगा। पांच विधायकों का मनोनयन उपराज्यपाल करेंगे। दो सीटें कश्मीरी विस्थापितों और एक सीट पीओजेके विस्थापित के लिए आरक्षित है। कश्मीरी विस्थापितों में एक सीट महिला के लिए आरक्षित रहेगी। इसके अतिरिक्त सदन में उचित प्रतिनिधित्व नहीं होने पर दो और सीटों पर महिलाओं को मनोनीत किया जाएगा। मुख्य संशय दिल्ली और पुडुचेरी मॉडल को लेकर है। दिल्ली में विधानसभा की 70 सीटें हैं। मनोनयन नहीं होता। पुडुचेरी में 30 सीटों पर चुनाव जबकि तीन सदस्य मनोनीत होते हैं। केंद्र शासित प्रदेशों में प्रशासन का उल्लेख संविधान के अनुच्छेद 239 में है। 239ए के अनुसार विधानमंडल सर्वोच्च है। सदन उपराज्यपाल से ऊपर है। हालांकि मद्रास उच्च न्यायालय व्यवस्था दे चुका है कि एलजी सदन में पारित विधेयकों को रोक सकते हैं। दिल्ली में 239एए के प्रावधान लागू होते हैं। दोनों केंद्र शासित प्रदेशों में सरकार के लिए वित्तीय मामलों, टैक्स लगाने, छूट देने, बदलने वगैरह में उपराज्यपाल की सहमति आवश्यक होती है। जुलाई में केंद्रीय गृह मंत्रालय ने पुनर्गठन कानून की धारा 55 में संशोधित नियमों को अधिसूचित किया था। इसमें उप राज्यपाल को विस्तारित शक्तियां देने वाली नई धाराएं जोड़ी गई हैं। इसके बाद राजनीतिक हल्कों में अटकलें लगीं कि पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने में देर लगेगी।

यही नहीं, सुप्रीम कोर्ट से जमानत पाने वाले बारामुला के निर्दलीय सांसद इंजीनियर रशीद ने अपनी अवामी इत्तेहाद पार्टी (एआईपी) और प्रतिबंधित होने के कारण निर्दलीय चुनाव लड़ रही जमात-ए-इस्लामी के साथ तालमेल कर लिया है। पहले चरण की 24 सीटों पर मतदान के ठीक पहले हुए इस समझौते को नए समीकरणों का संकेत माना जा रहा है। राष्ट्रवादी इसे संदेह की दृष्टि से देख रहे हैं। चुनाव के पहले रशीद की रिहाई केंद्र सरकार से उनके सहयोग के भरोसे का नतीजा माना जा रहा है। नेशनल कांफ्रेंस और पीडीपी को अपने प्रभाव क्षेत्र वाले इलाकों में मात देने की नीयत से चाल चली गई है। एआईपी कश्मीर घाटी की 35 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। लोकसभा चुनाव में रशीद ने 18 में से 14 विधानसभा क्षेत्रों में जीत हासिल की थी। अनजान सी पार्टी के इतनी सीटों पर उम्मीदवार उतारने से आश्चर्य है। कहा जा रहा है कि 2014 में पीडीपी की तरह ही 2024 में एआईपी-जमात गठबंधन से भाजपा का चुनाव पश्चात समझौता संभव है। घाटी की 47 में से 28 सीटों को खाली छोड़कर भाजपा ने इस संभावना के सशक्त होने का संदेश दिया है। अल्पमत से बचने और बहुमत की सरकार बनाने के लिए भाजपा 62 सीटों पर लड़ कर 50 सीटें जीतने पर जोर लगा रही है।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आज कई विशिष्ट स्थानों की युति बनेगी। ध्यान आज यह ध्यानान रखने है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके विपरीत कुछ होगे और दूसरी तरफ, आपके चित्त वर्ती में ताकतवर तरका पहिए। तब न सिर्फ हमारे सामने में और व्यक्ति सुधरे को सुलझाने वाला ताकतवरका ऊर्जा की सकारात्मक होगे, शारिक प्रकाशित वर्तमानों में भी, जहां वह ताकतवरका हमें सहयोग और कामकाज में लाभ प्रदान करेगा

मेष
सरकारी कामों में सफलता मिलेगी। पेट दर्द से परेशानी हो सकती है। आज आप किसी भी कार्य को दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वास के साथ करेंगे। उसमें सफलता भी प्राप्त भी करेंगे। पिता की ओर से आपको लाभ हो सकता है।

वृष
आप में आज आत्मविश्वास कूट-कूटकर भरा रहेगा। किसी भी काम को करने के लिए आप जल्दबाज़ी में निर्णय ले सकते हैं। पिता तथा बड़ों की ओर से लाभ होगा। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि हो सकती है। वाणी में उग्रता ना रखें।

मिथुन
रोमांस के लिए आज अनुकूल दिन है। आज का हर कार्य आप दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वास से पूरा करेंगे। प्रवास-पर्यटन की संभावनाएं है। अच्छा भोजन और नए वस्त्र मिलने का अवसर मिल सकता है। भागीदारी से लाभ होगा।

कर्क
मानसिक रूप से स्वस्थता का अनुभव नहीं करेंगे। निराशा और असंतोष की भावना से काम में मन नहीं लगेगा। कुटुंबजनों के साथ किसी विषय पर वाद-विवाद हो सकता है। विद्यार्थियों को अभ्यास का अपेक्षित परिणाम नहीं मिलेगा। मन में चिंता रह सकती है।

सिंह
विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में लगेगा। सरकारी कामों में आर्थिक लाभ आपको मिल सकता है। संतान के लिए पूंजी निवेश करेंगे। नई योजना का आरंभ करने के लिए आज अनुकूल दिन है। सरकारी काम में लाभ होगा।

कन्या
अधिकारियों से काम का उचित फल भी मिल सकता है। भाई-बंधुओं के साथ कोई झगड़ा दूर होगा। व्यापार लगातार परिवर्तन होते रहेंगे। आर्थिक विषय में सावधानी बरतनी आवश्यक है। नेगेटिव विचारों से मन परेशान रह सकता है। आपकी मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

तुला
आज आपका स्वास्थ्य नरम-गरम रह सकता है। शारीरिक रूप से आलस्य और अशक्ति का अनुभव करेंगे। व्यापार में बाधाएं उपस्थित होंगी। गलत कामों से दूरी बनाए रखें। किसी भी योजना को सावधानीपूर्वक करें। वाहन सुख मिलेगा।

वृश्चिक
आपका आज का दिन शुभफलदायी है। कई क्षेत्रों से आपको लाभ होगा। मित्रों से लाभ होगा और उनके पीछे धन खर्च भी हो सकता है। पर्यटन स्थल की सैर आपको रोमांचित करेगी। परिजनों से मुलाकात आनंददायी हो सकती है।

धनु
आज अचानक धन खर्च होने का योग है। यह खर्च स्वास्थ्य के कारण भी हो सकता है। व्यावहारिक या सामाजिक काम के लिए बाहर जाना हो सकता है। खान-पान में ध्यान रखें। क्रोध तथा नकारात्मक विचारों से दूर रहें।

मकर
आपको उग्र स्वभाव पर संयम रखने की सलाह दी जाती है। आज आप मानसिकरूप से थकान का अनुभव करेंगे। अधिक परिश्रम की तुलना में कम फल की प्राप्ति होगी। संतान के विषय में आपको चिंता हो सकती है।

कुंभ
आज का दिन आपके लिए अच्छा होगा। व्यापार स्थल पर वातावरण अनुकूल रहेगा। उच्च अधिकारी आप पर प्रसन्न रहेंगे। आप का हर काम आज सफलता से पूरा होगा। नौकरी में पदोन्नति भी हो सकती है।

मीन
आज इगो के कारण किसी से बातचीत में मनमुटाव हो सकता है। मित्रों के साथ किसी बात विवाद हो सकता है। स्वभाव में आवेश और क्रोध को यात्रा अधिक रहेगी। धार्मिक कामों में धन का खर्च हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। प्रवास-पर्यटन की संभावनाएं है।

शख्सियत

'समन्दर ना हो तो कश्ती किस काम की, मजाक ना हो तो मस्ती किस काम की- दोस्तों के लिए कुर्बान है ये जिन्दगानी क्योंकि दोस्त ना हों तो ये जिन्दगी किस काम की'

मन्द मुस्काती आँखें, हमेशा मजाक का मन,कोसो दूर तनाव हमेशा हंसमुख मन ऐसी हैं हमारी आज की शख्सियत। नमस्कार मित्रों हमारी आज की शख्सियत कॉलम के स्टार हैं विमल तिवाड़ी। कब जन्म हुआ ये तो जानकारी नहीं लेकिन जब से जन्म हुआ मुस्कान भरे चहरे से मुझाए हुए लोगों के लिए ऊर्जा का काम करते रहे हैं। राजगढ़ कस्बे से निकले विमल युवाओं के लिए सच में आनन्द व उत्साह भर देने वाले शख्स के रूप में जाने जाते हैं। हर क्षण मौज मस्ती और आनन्द। प्रकृति से इतना अधिक प्रेम कि बस पूछो ही मत। हर युवा साथी के दिल की धड़कन के रूप में विमल तिवाड़ी का नाम सबकी जुबां पर रहता है। अपने साथियों का जन्मदिन ऐसे मनाते हैं वो सच में यादगार बन जाता है। मूँह लटका कर बैठना इनके जीवांत व्यक्तित्व के बिलकुल विपरित है। सबकों साथ लेकर मौज मस्ती करना इनकी बेहतरीन परवरिश का एक हिस्सा है। संघर्षों के थपेड़ों के साथ आज की इस भागदौड़ और दिखावटी दुनियां में लोगों को ये कह देना कि भाई बैठा है याद कर लेना हाजिर मिलूंगा ऐसे लोग भी लुप्तता की श्रेणी में पहुँच रहे हैं लेकिन यारों के यार विमल भैया का जीवन सच में खुद भी आनन्द लेकर दूसरों को आनन्दित करने जैसा ही है। ऐसा नहीं है कि हर समय हीरोपंती या मौज मस्ती हां जब अपने व्यवयाय में लगते हैं तो इतने गंभीर हैं कि पूरी ऊर्जा व जोश के साथ अपने प्रतिष्ठान पर व अपने ग्राहकों की संतुष्टी पर ध्यान देते हैं। आज इन्हे आर.ओ किंग के नाम से भी जाना जाता है। अलवर के लोगों को बिना फ्लोराईड वाला पानी पिलाना हालांकि ऊंट को रेलगाड़ी में बिठाने के समान है लेकिन इस सफल व्यवसायी ने कर दिखाया। आज बड़ी-बड़ी कम्पनी या बड़े-बड़े अपार्टमेंट हों सब जगह विमल तिवाड़ी झंडा गड़ा है कारण ये है कि ये अपने ग्राहकों के प्रति खासे मिलनसार हैं। दैनिक बढ़ता राजस्थान टीम आशा करती है कि ये अपने मित्रों के चेहरों पर हमेशा मुस्कान ऐसे ही बिखेरते रहें।

विमल तिवाड़ी
(आर.ओ व्यवसायी)

जय हिन्द
रूपक शर्मा

आज का इतिहास

देश और दुनिया में 17 सितंबर का इतिहास कई महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी है और कई महत्वपूर्ण घटनाएं इतिहास के पन्नों में हमेशा के लिए दर्ज हो गई हैं। UPSCमेंस एग्जाम के अलावा कई प्रतियोगी परीक्षाओं और इंटरव्यू में ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में पूछा जाता है। इसलिए इस ब्लॉग में 17 सितंबर का इतिहास (17 दिया गया है। 17 सितंबर का इतिहास काफी महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि 1957 में 17 सितंबर के दिन ही मलेशिया संयुक्त राष्ट्र में शामिल हुआ था। 1956 में आज ही के दिन भारतीय तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग का गठन हुआ था। 1949 में 17 सितंबर के दिन ही दक्षिण भारतीय राजनीतिक दल द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) की स्थापना हुई थी।

17 सितंबर की महत्वपूर्ण घटनाएँ

- 2017 में आज ही के दिन कोरिया ओपन सुपर सीरीज जीतने वाली पहली भारतीय शटलर पीवी सिंधु बनी थीं।
- 2011 में 17 सितंबर के दिन ही न्यूयॉर्क के जुकोट्टी पार्क में वॉल स्ट्रीट घेरो आंदोलन की शुरुआत हुई थी।
- 2008 में आज ही के दिन जहाजरानी राज्यमंत्री के. एव. मुनियप्पा ने विश्वकर्मा राष्ट्रीय पुरस्कार और राष्ट्रीय संरक्षा पुरस्कार-2006 प्रदान किए थे।
- 2006 में 17 सितंबर के दिन ही विश्व कप हॉकी में भारत को 11वां स्थान मिला था।
- 2006 में आज ही के दिन भारतीय वायु सेना की स्पेशल फोर्स यूनिट गरुड़ कमांडो कांगो के शांति मिशन पर रवाना हुई थी।
- 2004 में 17 सितंबर के दिन ही यूरोपीय संसद ने मालदीव पर प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव पारित किया था।
- 1983 में आज ही के दिन अमेरिका में पहली बार वेनेसा विलियम्स ने मिस प्रतिश्रीगिता जीती थी लेकिन उन्हें बाद में यह खिताब लौटाना पड़ा था।
- 1982 में 17 सितंबर के दिन ही भारत और सिलोन (श्रीलंका) के बीच पहला क्रिकेट टेस्ट मैच खेला गया था।
- 1970 में आज ही के दिन जॉर्डन में गृह युद्ध शुरू हुआ था।
- 1957 में 17 सितंबर के दिन ही मलेशियां संयुक्त राष्ट्र में शामिल हुआ था।
- 1956 में आज ही के दिन भारतीय तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग का गठन हुआ था।
- 1949 में 17 सितंबर के दिन ही दक्षिण भारतीय राजनीतिक दल द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) की स्थापना हुई थी।
- 1922 में आज ही के दिन ब्रव साइकिल चालक पीट मोस्कास विश्व चैंपियन बना था।

17 सितंबर को जन्में प्रसिद्ध व्यक्ति

- 1986 में आज ही के दिन भारत के स्पिनर रविचंद्रन अश्विन का जन्म हुआ था।
- 1950 में 17 सितंबर के दिन ही भारतीय राजनेता और वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जन्म हुआ।
- 1922 में आज ही के दिन अमेरिकी लेखक, उपन्यासकार, नाटककार और निबंधकार वंस बीजौली का जन्म हुआ था।
- 1915 में 17 सितंबर के दिन ही प्रसिद्ध भारतीय विक्रार मक़बूल फ़िदा हुसैन का जन्म हुआ था।
- 1879 में आज ही के दिन भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, राजनेता और सामाजिक कार्यकर्ता ई वी रामास्वामी नायकर का जन्म हुआ था।
- 1872 में 17 सितंबर के दिन ही भारत की आज़ादी के लिए संघर्ष करने वाले छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता सेनानियों में से एक वामनराव बलिराम लाखे का जन्म हुआ था।

विशेष आलेख

चीन पर कभी यकीन नही किया जा सकता

अशोक मधुप

लगातार चार साल से चले आ रहे भारत चीन के बीच तनाव के कम होने के संकेत हैं। भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधों को लेकर हाल में घटनाक्रम बहुत तेजी से घटा है। चीन भारत सीमा से सेना का पीछे हटना बहुत अच्छा है किंतु चीन की बात पर आंख मूंदकर यकीन नही किया जा सकता। समझौते करने के बाद अपनी बात से मुकरना उसकी आदत रही है। धोखा देना चीन का चरित्र है। उसपर पूरी तरह से नजर रखनी होगी। उसकी चाल के अनुरूप हमें अपना व्यवहार और तैयारी करना होगी। भारत चीन सीमा विवाद के सुलझने के संकेत गुरुवार को ही सेंट पीटर्सबर्ग में ब्रिक्स एनएसए लेवल की समिट के साइडलाइन्स पर हुई उस बैठक के दौरान ही दिख गए थे जो एनएसए अजित डोभाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के बीच हुई थी। भारतीय विदेश मंत्रालय की ओर से बैठक के बाद जारी प्रेस नोट में इस बात का जिक्र था कि दोनों देशों ने बचे हुए क्षेत्रों में भी पूर्ण डिसएंगेजमेंट की दिशा में काम करने को लेकर सहमति जताई है। जानकार मानते हैं कि गतिरोध दूर करने करने की दिशा में ले जाने की प्रक्रिया एकाएक नहीं होती। इसके लिए बैकग्राउंड में काम होता रहता है। ओआरएफ में फेलो और चीन मामलों के जानकार कल्पित मणकिकर कहते हैं कि ' ऐसा एक लंबी प्रक्रिया के तहत होता है। दोनों देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और दोनों देशों के विदेश मंत्री लगातार मुलाकात करते आ रहे हैं। पिछले चार सालों से बॉर्डर मुद्दों को सुलझाने को लेकर कोशिशें लगातार हो रही है। सेना के कमांडर स्तर पर बातें अलग से होती रही हैं।भारत और चीन दोनों की ओर से इस तरह की कोशिशें की जा रही थी। हालांकि अब जो दिख रहा है, उसके मद्देनजर इस तरह की कोशिशें क्या दिशा लेंगी, इसे लेकर अभी वेट एंड वॉच की स्थिति में ही रहा जा सकता है। बॉर्डर पर आए गतिरोध के मद्देनजर विदेश मंत्रियों और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की बैठकें किए जाने का एक मैकेनिज्म तैयार किया गया है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने पूर्वी लद्दाख में सीमा मुद्दे पर गुरुवार को कहा कि सैनिकों की वापसी से संबंधित मुद्दे लगभग 75 प्रतिशत तक सुलझ गए हैं लेकिन बड़ा मुद्दा सीमा पर बढ़ते सैन्यीकरण का है। जिनेवा में थिंकटैंक के एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि जून 2020 में गलवन घाटी में हुए टकराव ने भारत-चीन संबंधों को समग्र रूप से प्रभावित किया। जयशंकर ने कहा कि विवादित मुद्दों का समाधान ढूंढने के लिए दोनों पक्षों में बातचीत चल रही है। हमने कुछ प्रगति की है। मोटे तौर पर सैनिकों की वापसी संबंधी करीब तीन-चौथाई मुद्दों का हल निकाल लिया गया है। लेकिन इससे भी बड़ा मुद्दा यह है कि हम दोनों ने अपनी सेनाओं को एक-दूसरे के करीब ला दिया है और इस लिहाज से सीमा का सैन्यीकरण हो रहा है। सूत्रों का कहना है कि भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच पूर्वी लद्दाख में कुछ टकराव वाले बिंदुओं पर गतिरोध बना हुआ है। भारत कहता रहा है कि सेना के पूर्व स्थान पर पहुंचे बिना सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति नहीं होगी, चीन के साथ संबंध सामान्य नहीं हो सकते। जयशंकर ने कहा कि 2020 में जो कुछ हुआ, वह कुछ कारणों से कई समझौतों का उल्लंघन था जो अभी भी हमारे लिए पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं। चीन ने वास्तविक नियंत्रण रेखा पर बहुत बड़ी संख्या में सैनिकों को तैनात किया और स्वाभाविक रूप से जवाबी तौर पर हमने भी अपने सैनिकों को भेजा। 2020 की झड़प के बाद से दोनों देश सीमा पर बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए भी प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, जिसे वास्तविक नियंत्रण रेखा के रूप में भी जाना जाता है। भारत द्वारा उच्च ऊंचाई वाले हवाई अड्डे तक एक नई सड़क का निर्माण चीनी सैनिकों के साथ 2020 में होने वाली घातक झड़प के मुख्य कारणों में से एक माना जा रहा है। इस बार चीनी सेना के सीमा से पीछे हटने का कारण चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के राजनीतिक ब्यूरो के सदस्य वांग काबयान भी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अशांत विश्व का सामना करते हुए, दो प्राचीन पूर्वी सभ्यताओं और उभरते विकासशील देशों के रूप में चीन और भारत को स्वतंत्रता पर दृढ़ रहना चाहिए, उन्होंने आगे कहा कि एकता और सहयोग का चयन करना चाहिए तथा एक-दूसरे को नुकसान पहुंचाने से बचना चाहिए। वांग ने उम्मीद जताई कि दोनों पक्ष व्यावहारिक दृष्टिकोण के जरिए अपने मतभेदों को उचित ढंग से हल करेंगे और एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करने का उचित तरीका ढूंढेंगे। चीन-भारत संबंधों को स्वस्थ, स्थिर और सतत विकास के रास्ते पर वापस लाएंगे।इतना सब हो रहा है पर जरूरी यह है कि दोनों का मई 2020 की यथास्थिति पर वापस लौटना ही समाधान है। निश्चित रूप से पीछे हटना समाधान नहीं है। यदि निश्चित रूप से समाधान के रास्ते पर चले तो भारत नुकसान में ही रहेगा। इन सब को देखकर भारत को चलना होगा। मई 2020 की स्थिति पर चीन सहमत होगा, ऐसा नही लगता।सीमा विवाद के चार साल के दौरान समाचार आए की चीन सीमा पर नए हवाई अड्डे-सैनिक छावनी उनके लिए बंकर बना रहा है। अपने सीमा से सटे क्षेत्र में गांव विकसित कर रहा है।भारतीय क्षेत्र के स्थानों के नाम बदल रहा है।हालांकि विवाद की अवधि में भारत ने भी सीमा पर सुरक्षा ढांचा विकसित किया है।नए एयरबेस तैयार कर रहा है। ठंडे स्थानों में रहने के लिए सैनिकों को प्रशिक्षित करने के साथ ही उनके लिए बर्फ के दौरान भी रहने के लिए शीतर से गर्म करने वाले उनके टैंट बना रहा है। इस प्रक्रिया को भारत का और तेज करना होगा। सीमा रेखा के सटाकर गांव विकसित करने होंगे।तोकि चीन की गतिविधि पर नजर रखी जा सके।एक तरह से चीन की प्रत्येक कार्रवाई का उत्तर उसके कदम ही से आगे बढ़कर देना होगा।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,हथीपुरा रोड़ खण्डवा,भिवाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 "प्रतिक्षा" सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-तनुजा पठान* । प्रधान संपादक-राम विलास विजयवर्गीय भो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन नं.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-बाईपास भिवाई, टोंक फोन नं.01432-244881 भिवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-चेहाल सिंह का नोहरा,अलवर भो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा भो.9414823448 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

विचार
नवभारत टाइम्स
नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। मंगलवार, 17 सितंबर 2024

शांति का इंतज़ार

जब भी ऐसा लगता है कि मणिपुर में हालात शायद कुछ बेहतरी की ओर बढ़ रहे हैं, तभी करीब डेढ़ बरस से सुलग रही आग फिर भड़क उठती है। इस महीने की शुरुआत से राज्य में जिस तरह एक के बाद एक हिंसक घटनाओं का सिलसिला चला है, उसने चिंता और बढ़ा दी है। केवल मणिपुर ही नहीं, यह पूरे देश के लिए सोचने की बात है कि आखिर मई 2023 से शुरू हुए विवाद को अभी तक क्यों सुलझाया नहीं जा सका।

अराजक तत्व | राज्य में चल रहा विरोध-प्रदर्शन दिन-ब-दिन और हिंसक होता जा रहा है। अब रॉकेट और बम चल रहे हैं और पुलिस अफसरों को चिंता जतानी पड़ रही है कि सुरक्षाकर्मियों के खिलाफ अत्याधुनिक घातक हथियारों का इस्तेमाल किया जा रहा।

मणिपुर । आग बुझ ही नहीं रही

घातक हथियार | अगर प्रदर्शन आम लोगों और स्टूडेंट्स का है, तो ये हथियार कहां से आ रहे? पिछले दिनों राज्य के पहले मुख्यमंत्री के आवास पर रॉकेट से हमला हुआ था। इसी शनिवार को एक मंत्री के आवास पर ग्रेनेड अटैक हुआ। इन घटनाओं से पता चलता है कि राज्य में ऐसे तत्व सक्रिय हैं, जो हालात को सामान्य नहीं होने देना चाहते।

विवाद के कई पहलू | मणिपुर में शांति बहाली के लिए सभी पक्षकारों का किसी आम सहमति पर आना जरूरी है। वहां तीन पक्ष हैं - मैतेई, कुकी और नगा। यह विवाद शुरू हुआ था मैतेई समुदाय को ST का दर्जा देने की मांग के साथ। कुकी और नगा इसका विरोध कर रहे हैं। लेकिन, जिस तरह से इस विवाद में जंगल और जमीन का मुद्दा, अवैध प्रवासियों की समस्या, ड्रग्स का जाल और दूसरे कानूनी पहलू उभरते चले गए, उससे स्पष्ट है कि गतिरोध कई मोर्चों पर है और इन सभी पर काम किए जाने की जरूरत है।

अपना फायदा | एक बड़ी समस्या यह है कि हर पक्ष मणिपुर को बस अपनी नजर से देख रहा है। कुकी समुदाय को लगता है कि राज्य का मौजूदा नेतृत्व उनके साथ न्याय नहीं कर सकता। मैतेई समुदाय चाहता है कि राज्य सरकार को केंद्रीय सुरक्षा बलों की कमान भी दे दी जाए। वहीं, तीसरा धड़ा यानी नगा समुदाय अपने लिए अलग प्रशासनिक ढांचे की मांग कर रहा है। कुल मिलाकर स्थिति बहुत उलझी हुई है, जिसे संवेदनशीलता के साथ सुलझाने की जरूरत है।

बाहरी संकट | पूर्वोत्तर ने लंबे समय तक उग्रवाद की मार झेली है। मौजूदा संकट से पुरानी समस्या के फिर सिर उठाने का खतरा पैदा हो गया है। इस ओर ध्यान इसलिए भी जाता है क्योंकि पड़ोसी म्यांमार में जुंटा को सत्ता संभालने में मुश्किल आ रही है। सशस्त्र विद्रोहियों की ताकत वहां बढ़ रही है। केंद्र की नजर इस पर जरूर होगी। म्यांमार की उथल-पुथल मणिपुर में कोई हलचल न मचाए, इसके लिए अपना घर जल्द से जल्द ठीक करना होगा।

धूप-छांव

छुपी हुई ताक़तें

प्रणव प्रियदर्शी

वह योग का एक कोर्स था, लेकिन बीच-बीच में वहां ऐसी भी चीजें मिलती रहीं जिनके बारे में कल्पना तक नहीं की थी। उन्हीं में से एक था यह नुस्खा कि जिंदगी को आकार और दिशा दे रही ताकतों की पहचान कैसे की जाए। आम तौर पर हम उन्हें भगवान और किस्मत जैसे शब्दों के जरिए व्यक्त करते हैं। दिक्कत इन शब्दों में नहीं है। लेकिन इन्हें ज्यों का त्यों स्वीकार कर लें तब भी हम वहां तक नहीं पहुंचते जहां तक ये शब्द हमें ले जाना चाहते हैं। ये ताकतें इतनी ही अनजान, हमारी नजरों से उतनी ही ओझल रह जाती हैं। ऐसे में क्या करें?

वहां बताया गया कि जिन चीजों को हम नहीं समझ रहे होते, उनमें एक अलग तरह का रहस्य, एक अलग तरह का ग्लैमर जुड़ जाता है। पहले तो खुद को उस ग्लैमर से अलग करना जरूरी होता है, वरना सच सामने आ जाए तब भी हम उसे पहचान नहीं पाते। लगता है, यह सच इतना मामूली नहीं हो सकता। दूसरी बात यह कि उन ताकतों को देखने-पहचानने के लिए हमें अपनी नजरों में खुद की अहमियत कम करनी होगी। नुस्खा देते हुए कहा गया कि अगर आप इस क्लास में रोज वक्त पर पहुंचते हैं तो उसमें आपको कोई खास बात नहीं लगती। इसका सारा क्रेडिट अनजाने ही आप खुद को दिए रहते हैं। कोई पूछे कि कैसे आप रोज वक्त पर पहुंच जाते हैं तो 'मैं समय पर उठता हूं, वक्त पर निकलता हूं, लेट होना मुझे पसंद ही नहीं' जैसे जवाब मिलते हैं। ये गलत भी नहीं। लेकिन एक दिन आप आधा घंटा लेट हो जाइए और फिर देखिए जवाब- रात भर पर कुछ मेहमान आ गए थे, तो वक्त पर सोना नहीं हो सका, अलार्म नहीं बजा, ट्रैफिक जाम ने पूरी कसर निकाल दी...। पता नहीं कितनी वजहें आ जाती हैं सामने।

ये सारे फैक्टर लगभग रोज होते हैं, इनकी भूमिका भी होती है, पर हमारा ध्यान इनकी तरफ नहीं जाता। ये सामने तब आते हैं जब दोष हमें अपने ऊपर से हटाना होता है। वरना ये परदे के पीछे से हमारे काम को आसान या कठिन बनाते रहते हैं, हम उनकी आसानी और कठिनाई के जरिए बनती-बिगड़ती-बदलती राह पर कदम बढ़ाते रहते हैं, पर नहीं समझ पाते कि कब इनकी वजह से हमारी राह मुड़ गई, कब हमारी मंजिल बदल गई। पूरा श्रेय हमारे हिस्से ही आता है सफर तय करने और मंजिल तक पहुंचने का।

खैर, नुस्खा अपनी जगह ठीक है, मगर सवाल अब यह है ये सारे फैक्टर छुपे भी रहें तो क्या दिक्कत है, राह चाहे जैसे भी बन-बिगड़ रही हो, उस पर बढ़ रहे कदम तो हमारे ही होते हैं!

बोल वचन

लंगर की दाल

राहुल पाण्डेय

काल रात एक मित्र को फोन किया तो पता चला कि साहब लंगर की लाइन में लगे हैं। मैंने पूछा तो कहने लगे कि लंगर में जितनी जायकेदार दाल मिलती है, वैसी दुनिया में और कहीं नहीं मिलती। लंगर की दाल वाकई किसी अमृत से कम नहीं होती। एक तो उसमें प्रेम का नमक होता है, और दूसरे पुण्य की हल्दी। धीमे-धीमे जैसे पकता है कोई सपना, वैसे ही धीमे-धीमे पकती है लंगर की दाल। लंगर शब्द अब दुनिया में अनजान नहीं रह गया है। आंधी-तूफान, भूकंप-बाढ़ हो या फिर मुल्कों के बीच युद्ध करते हुए नीयता के पाताल में जाने की होड़, लंगर सब जगह चलता है और सभी का पेट भरता है। आमतौर पर इसका अर्थ होता है सामूहिक रसोई, जहां सब मिलकर बनाते और खाते हैं। लंगर आश्रमों में चलता है, साधु-संतों के डेरों, मंदिरों में और जत्थों की रसोई भी लंगर कहलाती है। लंगर शब्द संस्कृत से आया है, जहां इसे अनलगृह कहते हैं यानी रसोईघर। सबसे बड़ी उपलब्धि लंगर की यह है कि इसमें रूढ़िवाद, जात-पात और ऊंच-नीच को खत्म करने की ताकत है। सिखों में खास महत्व है लंगर प्रथा का। गुरु नानक देव शिष्यों के साथ बैठकर भोजन किया करते थे। वहीं, सिखों के तीसरे गुरु अमरदास जी ने जिस लंगर का शुभारंभ किया, वह आज तक अनवरत चल रहा है। लंगर इंग्लैंड में भी चलता है, जहां से इंग्लिश आई। वैसे इंग्लिश में भी यह लंगर ही है। इस लंगर तो नहीं, अंग्रेजी ने पानी के जहाजों में होने वाले लंगर के लिए शब्द जरूर बनाया है, एंकर। यह वाला लंगर जहाज को स्थिर करने के काम में आता है।

AI image

गुलामी के निशानों को पीछे छोड़ PM के नेतृत्व में उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ रहा देश

विकसित भारत का पूरा होगा संकल्प

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देश का शासन संभाले 10 वर्ष पूरे चुके हैं। इस दौरान हर क्षेत्र में अभूतपूर्व सकारात्मक बदलाव हुआ है। आजादी के अमृत महोत्सव में गुलामी की मानसिकता से मुक्ति की दिशा में हुए कार्यों ने देश की सांस्कृतिक विविधता और महान सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित तो किया ही है, साथ ही इसे पूरी दुनिया में प्रतिष्ठित भी किया है।

नरेंद्र मोदी का कार्यकाल भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का काल है। बीते 10 वर्षों में देश की राजनीतिक संस्कृति में तो बदलाव आया ही है, कार्यसंस्कृति में बदलाव का भी सबने अनुभव किया है। महान संस्कृति और विरासत के प्रति भी लोगों में भाव जागा है जो आजादी के बाद और मोदी सरकार के आने के पहले कहीं खो गया था।

आज जनता को विश्वास है कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत का संकल्प पूरा होगा। आजादी के बाद से देश में राजनीति के केंद्र रहे राम मंदिर, तीन तलाक, जम्मू-कश्मीर में धारा 370 और नागरिकता कानून जैसे तमाम मुद्दों को प्रधानमंत्री ने स्थायी समाधान तक पहुंचाया। मोदी सरकार ने बीते एक दशक में सांस्कृतिक पुनरुत्थान, गरीब कल्याण और वैश्विक सम्मान का नया कीर्तिमान बनाया है।

पहले देश की सांस्कृतिक विरासत पर कई आघात हुए। देश के विभाजन के बाद न केवल हिंदू समाज को अस्तित्व की लड़ाई लड़नी पड़ी बल्कि हमारी महान संस्कृति को भी अग्निपरीक्षा से गुजरना पड़ा। लेकिन नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद यह माहौल बदला। उन्होंने देशवासियों को सांस्कृतिक विरासत एवं धरोहरों पर गर्व करना सिखाया। उन्होंने सांस्कृतिक विरासत को आम जीवन, विदेश नीति और विकास से जोड़ा, जो देश को न केवल एकसूत्र में पिरोता है बल्कि समाज के सभी वर्गों में समानता का सेतु भी बनाता है। काशी तमिल संगमम और सौराष्ट्र तमिल संगमम के माध्यम से पहली बार पीएम मोदी ने बताया कि सांस्कृतिक विविधता देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में कितनी कारगर साबित हो सकती है।

बीते वर्षों में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का निर्माण, उज्जैन में भव्य श्री महाकाल महालोक का लोकार्पण, अयोध्या में लाखों दीपों से प्रभु श्रीराम की विजय यात्रा का अभिनंदन, 500 वर्ष बाद भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर के निर्माण कार्य, जम्मू-कश्मीर में मंदिरों का जीर्णोद्धार, पावागढ़ में भव्य मंदिर का निर्माण, मां विंध्यवासिनी कॉरिडोर का निर्माण, बुद्ध सर्किट का निर्माण, जैन सर्किट का निर्माण, सूफी सर्किट का निर्माण और केदारनाथ-बदरीनाथ-सोमनाथ धाम का विकास इसका प्रमाण है कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश की सनातन संस्कृति का पुनर्जागरण हो रहा है।

1600 वर्ष पुरानी धरोहर नालंदा विश्वविद्यालय का पुनरुत्थान हुआ तो योग एवं आयुर्वेद का भी परचम लहराया। 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद संयुक्त राष्ट्र महासभा में नरेंद्र मोदी ने योग को संपूर्ण विश्व के सामने प्रखरता से रखते हुए 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के तौर पर मान्यता दिलवाई। देखा जाए, तो यह वैश्विक पटल पर भारत की सांस्कृतिक विरासत की सामूहिक स्वीकार्यता का पहला महत्वपूर्ण अवसर था।

जम्मू-कश्मीर के एक बड़े कालखंड के अंतराल के बाद सैकड़ों मंदिरों का कायाकल्प हो रहा है। श्रीनगर में 700 साल पुराने मंगलेश्वर भैरव मंदिर के जीर्णोद्धार का काम शुरू कर दिया है। अनंतनाग में मार्तंड सूर्य मंदिर का जीर्णोद्धार हो रहा है। कुपवाड़ा में मां शारदा देवी मंदिर का उद्घाटन हो चुका है।

यह एक विडंबना ही थी कि आजादी के वर्षों बाद भी हम उपनिवेशवादी मानसिकता को ढो रहे थे। कई शहरों, सड़कों, कई महत्वपूर्ण सरकारी संस्थानों और यहां तक कि देश की शिक्षा प्रणाली पर भी उपनिवेशवाद की छाप थी। प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से गुलामी की मानसिकता से मुक्ति दिलाने का प्रण लेते हुए इस पर कार्य शुरू किया। अंग्रेजों ने किंग जॉर्ज पंचम के सम्मान में इंडिया गेट और राष्ट्रपति भवन को जोड़ने वाली जिस सड़क का नाम किंग्सवे रखा था, उसे बदलकर उसका नाम कर्तव्य पथ कर दिया। भारतीय नौसेना के ध्वज से भी औपनिवेशिक काल के सेंट जॉर्ज क्रॉस को मराठा शासक छत्रपति शिवाजी महाराज की शाही मुहर से प्रेरित प्रतीक से बदला गया, इसी तरह इंडिया गेट के करीब 150 मीटर पर मौजूद कैनोपी में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा को स्थापित किया गया, जहां पहले किंग जॉर्ज पंचम की मूर्ति हुआ करती थी। इस सबसे आगे बढ़ कर प्रधानमंत्री आवास रेस कोर्स रोड को बदल कर लोक कल्याण मार्ग का नाम दिया गया। ये केवल नाम परिवर्तन नहीं था, बल्कि भाव का परिवर्तन था।

मोदी का नेतृत्व खास
- विरासत को लेकर जागरूकता बढ़ी
- विविधता में एकता का नया स्वरूप
- औपनिवेशिक प्रतीकों से छुटकारा

मोदी सरकार ने देश को भारतीयता के विचार से ओत-प्रोत नया संसद भवन दिया, जिसमें भारत की महान सभ्यता की विरासत के अंश के तौर पर सेंगोल को स्थापित किया गया। मोदी सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पेश करते हुए भाषाओं के माध्यम से सांस्कृतिक एकीकरण को बढ़ावा दिया। कोई भी युवा भाषाई जटिलता के कारण तकनीकी शिक्षा से वंचित न रहे इसका विशेष ध्यान रखते हुए नई शिक्षा नीति के तहत कई राज्यों में इंजिनियरिंग और मेडिकल की शिक्षा भी हिंदी भाषा में प्रारंभ की जा चुकी है।

भारत से अंग्रेजों के जाने के 70 वर्षों बाद भी उनके बनाए गए कानून न्यायालयों में बरकरार रहे। ऐसे कई कानून ब्रिटिश राज में भारतीयों के शोषण के औजार थे। गुलामी के हर प्रतीक को समाप्त करने की दिशा में इस सरकार ने भारतीय न्याय संहिता के रूप में देश को स्वदेशी कानून दिए हैं, जिनका उद्देश्य दंड देना नहीं बल्कि अपराध रोकना है।

आजादी के अमृत काल में सरकार के इन प्रयासों से भारत की सांस्कृतिक विरासत को नई पहचान मिल रही है। आज देश का युवा अपनी भाषा, संस्कृति और महान विरासत पर गर्व कर रहा है। देश के सांस्कृतिक जागरण के इस महायज्ञ के अग्रदूत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश विकास और विरासत के साथ आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास के पथ पर आगे बढ़ रहा है।

(लेखक प्रसिद्ध धर्मगुरु और अधिकेत में परमार्थ निकेतन आश्रम के अध्यक्ष हैं)

गणपति दर्शन करेंगा, तबी कुछ मिलेंगा

दीपक पावपोर

अबी अपुन अपना खास फ्रेंड बाबूराव का बोल बचन सुनेला। वो कहताए, 'इदर अपुन का इंडिया में रहेंगा तो तुमकूं कबी बी फंटाला नई आएंगा। बोले तो बारे में बोलने कूं सकताए। तुम कबी बी अक्खा साल का कैलेंडर देखने का। पैला जनवरी से धमाल चालू हो जाएंगा। पूरा साल चलेंगा। पैले नवा साल, फिर संक्रांत, बरस का भीतर दो-दो नवरात्रि, उसका बीच में बोले तो राखी, गणेशोत्सव, बाद में दसरा, दीवाली, हैप्पी न्यू ईयर। एक का पीछू दूसरा प्रोग्राम आएंगा तबी तुमकूं सोचने का टाइम भी नई मिलेंगा!'

इत्ता प्रवचन सुनके अपुन समज गएला कि अबी बाबूराव कूं नई रोकेंगा तो उसका फास्ट ट्रेन लास्ट स्टेशन पईंच जाके रुकेंगा। इस करके अपुन उसकूं बोला, 'बॉस, थोड़ा दम लेने का! पैले तुम थोड़ा अपुन कूं बताएंगा कि तुम इत्ता बोल बचन करताए उसका आगे कूं, पीच्छे कूं कुछ होताए कि नहीं? तुमारा पास कोई काम का बात होएंगा तबी कैने का। खाली पीली इदर अपुन का टाइम खोटी नई करने का।'

वो अईसाए भिड़, कि अपुन का कंट्री का भीतर भौत सा अईसा लोग होएंगी जिसकूं कबी बी शांति नई मिलाएंगा। अपना भेजा खराब करेंगा अकर दूसरा लोग का बी दिमाग का दही बनाएंगा। बाबूराव चोईंच कैटेगरी का होताए। उस दिन बाबूराव नवा बोल बचन किएला। वो कहताए, 'भिड़, तुम इत्ता बरस का हुएला। इदरईच बड़ा हुआ, काम-धंधा किएला, पन जबी भी गणपति का सीजन आताए, तुम कोई ना कोई गणेश मंदिर नई तो मंडल का भीतर दर्शन करने कूं जाताए कि नई?' अपुन बोला, 'बिलकुल जाताए, बॉस। काएंकू नई जाएंगा? अक्खा पब्लिक कुछ न कुछ गणपति बाप्पा से मांगताए। अपुन बी मांगताए।'

AI image

खाली पीली

बाबूराव- तुमकूं अपुन बताताए कि कोई बी भौत सारा पंडाल में काएकूं जाताए। बोले तो सबका अलग-अलग डिमांड होताए। कोई कूं नौकरी मांगताए कोई-कोई कूं घर मांगताए, कोई छोकरा कूं अच्छा नंबर से पास करने का रिक्वेस्ट करेंगा, कोई कूं उसका छोकरी का जल्दी सादी करना मांगताए। भौत सा लोग अईसा होएंगा कि उसका डिमांड का जास्ती लम्बा लिस्ट होएंगा। अबी वो एकईच पंडाल का गणपति से सब मांगेंगा तबी उसकूं कित्ता देरी लगेंगा। सब लोग जास्ती देर रुकेंगा तबी उदर गर्दी हो जाएंगा। इस करके तुमारा डिमांड का लिस्ट पाकिट में रखने का अकर अलग-अलग पंडाल में जाके अपना डिमांड एक-एक करके रखने का। अबी तुम पूछेंगा कि कऊन सा डिमांड कौन सा पंडाल में जाकर गणपति का आगे रखने का। अईसाए बॉस, पैले समज के लेने का कि उदर गणेश भगवान बईठाएंगा कऊन। अबी तुमकूं कोई इंडस्ट्री में सप्लाई का काम मांगताए, तबी देखने का कि कोई इंडस्ट्यलिस्ट किदर कूं गणेश बईठाएंगा। तुमकूं कोई ठेका मांगताए तबी देखने का कि गौरमेंट का कोई सीनियर हॉफिसर किदर कूं गणेश बईठाएंगा। डयरेक्टर, एक्टर लोग भी गणेश बैठाताए। पिक्चर नई तो सेंटिरयल का भीतर कोई काम मांगताए तबी उसका गणेश दर्शन करने का। किदर हॉस्पिटल का काम पड़ताए तबी डॉक्टर का गणेश खोजने का।"

अबी तुम सोचेंगा कि अईसा जगा पे तुम काम का बात कईसे करेंगा। अपुन बताताए कि तुमकूं जास्ती बात नई करने का। बस, आंख बंद करके आरती करने का अकर दक्षिणा देने का। भाई लोग श्रयाणा होताए। सबकूं पताए कि किसका किदर लोचा होताए, कऊन इदर दर्शन करने का वास्ते आएला अकर कऊन प्रसाद लेके आएगा। बोले तो जास्ती लोग इस करके गणेश भगवान बैठाताए कि उसकूं काम का लोग मिल जाएंगा।

शेयर करें अपने अनुभव
आम मुंबइया भाषा में यह लेख कैसा लगा हमें बताएं nbtreader@timesofindia.com पर, और सब्जेक्ट में लिखें-'खाली पीली'

यूं शांत हुआ पूजा विवाद

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पिछले दिनों गणेश पूजा के मौके पर चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ के घर पहुंचे तो उस पर सियासत होने लगी। विपक्ष के एक धड़े और सोशल मीडिया पर कई लोगों ने इसे मुद्दा बना दिया। इसे संविधान विरोधी बताया गया। कहा गया कि महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव को प्रभावित करने की कोशिश की जा रही है। वहीं, इस मामले में संविधान की धारा का भी हवाला दिया गया। हालांकि, सरकार की ओर से इस विवाद पर आधिकारिक रूप से कोई बयान नहीं आया। उधर, विपक्ष के अंदर ही इस मुद्दे पर दो राय रही। कांग्रेस सहित तमाम विपक्षी दलों में एक वर्ग ऐसा रहा, जिन्हें लगा कि पीएम के चीफ जस्टिस के घर जाने पर ओवररिएक्ट किया गया। वे इसे मुद्दा बनाने के पक्ष में नहीं थे। DMK ने तो आधिकारिक रूप से बयान देकर चीफ जस्टिस को समर्थन दिया। पार्टी सांसद विल्सन ने 'एक्स' पर पोस्ट कर कहा कि यह ऐसा मामला नहीं था, जिस पर चीफ जस्टिस की आलोचना की जाए। कई दूसरे विपक्षी दल भी इस विवाद से अलग रहे। कांग्रेस के अंदर कई नेताओं ने कहा कि पार्टी इस मुद्दे पर आधिकारिक बयान न दे। यही कारण है कि मुद्दा उठने के बाद एक-दो दिनों में शांत भी हो गया।

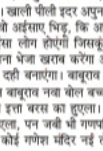

विशुद्ध राजनीति
पॉलिटॉक

JDU की परेशानी

बिहार में इन दिनों जमीन सर्वे और उसे डिजिटल करने के लिए बड़ा अभियान चलाया जा रहा है। इसे लेकर राज्य में बहुत सरगर्मी है। लोग इसे लेकर शिकायत भी कर रहे हैं। सबसे पेचीदा काम है कागज जुटाना। नीतीश सरकार की योजना है कि एक साल में सर्वे का काम पूरा कर लिया जाए। जो जमीन सरकार के हिस्से आएगी, उसे गरीबों के बीच बांटा जाएगा। सरकार ने भूमिहीनों के लिए पिछले दिनों एक योजना भी लॉन्च की थी। लेकिन, जिस तरह इस अभियान को लेकर प्रतिक्रिया आ रही है और स्थानीय स्तर पर जमीन सर्वे के नाम पर करप्शन की शिकायतें मिल रही हैं, उससे JDU नेतृत्व को चिंता होने लगी है।

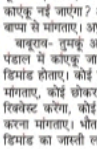

अब पार्टी इस काम पर तेजी से आगे नहीं बढ़ना चाहती। साथ ही, इसमें अधिकारियों का हस्तक्षेप कम चाहती है। पार्टी चाहती है कि यह काम अभी या तो रोक दिया जाए या ऐसा प्रावधान हो, जिसमें लोगों को अपनी जमीन के रेकॉर्ड डिजिटल कराने के लिए बहुत अधिक कागजात की जरूरत न पड़े। दरअसल, पार्टी नेतृत्व को लग रहा है कि सर्वे पूरा होने के बाद गरीबों को जमीन देने की योजना तो बड़ी है, लेकिन कहीं इससे उसकी साख न प्रभावित हो जाए।

हुड्डा ही किंग

हरियाणा विधानसभा चुनाव में इस बार कांग्रेस को टिकट वितरण में बहुत मशक्कत करनी पड़ी। राज्य में पार्टी पहले ही कई खेमों में बंटी थी, लेकिन सबसे बड़ी चुनौती थी हुड्डा कैंप को लेकर। इस बार भूपेंद्र हुड्डा ने साफ संकेत दे दिया कि वह समझौता नहीं करेंगे। टिकट वितरण में वह अपने लोगों को जगह दिलाने के लिए बीटी लगाते रहे। उनके पक्ष में एक बात यह भी रही कि पार्टी के अंदरूनी सर्वे में उनके चुने लोगों की स्थिति मजबूत दिख रही थी। इसका असर यह हुआ कि राज्य की 90 विधानसभा सीटों के लिए सबसे अधिक टिकट हुड्डा कैंप के नेताओं को मिले। पार्टी के एक नेता ने बताया कि लगभग 75 उम्मीदवार हुड्डा के करीबी हैं। कुमारी शैलजा और रणदीप सुरजेवाला सहित केंद्रीय नेतृत्व को बाकी सीटों पर ही अपने लोगों को एडजस्ट करवाना पड़ा। दरअसल, हुड्डा ने इस बार केंद्रीय नेतृत्व से पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि पिछली बार की तरह किसी तरह का कोई कम्पयूजन नहीं रहना चाहिए। पिछली दफा पार्टी इसी वजह से बहुत करीब रहकर भी सत्ता से दूर हो गई थी। साथ ही, हुड्डा ने यह संकेत भी दिया है कि यह उनका अंतिम टर्म है और इसके बाद वह नई पीढ़ी को सत्ता सौंप सकते हैं। दिलचस्प बात है कि पार्टी ने अशोक गहलोत को वहां ऑब्जर्वर बनाया है, जो हुड्डा के बेहद करीबी माने जाते हैं।

'दिल्ली नहीं, श्रीनगर का हूं'

जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव में इस बार नैशनल कॉन्फ्रेंस के उमर अब्दुल्ला ने पूरी ताकत लगा दी है। उन्हें पता है कि अगर इस बार सत्ता में आने में विफल रहे तो उनके लिए आगे की राह बेहद कठिन हो जाएगी। श्रीनगर में उनकी छवि एक ऐसे नेता की बनने लगी है जो दिल्ली की आबोहवा में रहना अधिक पसंद करता है। उनके बारे में यह धारणा भी बनी है कि आम लोगों से मिलना और उनके बीच आना-जाना उन्हें अधिक पसंद नहीं, और उनमें ईगो है। इस छवि को तोड़ने में उमर जी-जान से लगे हैं। चुनावी कैंपेन के दौरान वह अधिक से अधिक लोगों से मिल रहे हैं और उनसे माफी भी मांग रहे हैं। उमर जनता को बता रहे हैं कि वह दिल्ली नहीं, बल्कि उनके अपने श्रीनगर के हैं। वह अपनी टोपी को सामने कर लोगों से वोट देने की अपील कर रहे हैं। उनका यह बदला रूप चर्चा का विषय बना हुआ है।

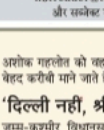

आरक्षण पर BJP की दुविधा

आरक्षण मसले पर BJP के बीच दुविधा है। वह विपक्ष के हमले का जवाब तो देना चाहती है, लेकिन यह नहीं चाहती कि यह बहुत बड़ा मुद्दा बने। दरअसल, पार्टी को अपने कोर वोटर, मिडल क्लास और सवर्ण वर्ग की भी चिंता है। पार्टी को लगता है कि अगर वह आरक्षण के मुद्दे पर बहुत आक्रामक रूप से आगे बढ़ेगी, तो उसका प्रतिकूल असर उसके पारंपरिक कोर वोट बैंक पर पड़ सकता है। पार्टी के एक नेता के अनुसार, भले नंबर के हिसाब से इन वर्गों की संख्या कम हो, लेकिन नैरेटिव को बनाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। ऐसे में उन्हें इग्नोर नहीं कर सकते हैं।

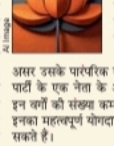
AI image

रीडर्स मेल
www.edit.nbt.in

नजरिया साफ
16 सितंबर का संपादकीय 'इस्तीफे का असर' पढ़ा। शराब घोटाले में अदालत का सामना कर रहे दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल ने भले ही इस्तीफे का एलान कर सबको चौंकाया है, लेकिन परदे के पीछे की राजनीति कुछ और कहती है। सवाल उठ रहा है, क्या हरियाणा चुनाव में AAP इस स्थिति को भुनाना चाहेगी? अभी के हालात में I.N.D.I.A. के साथ रिश्ते बेहतर रखना केजरीवाल की मजबूरी हो सकती है, लेकिन हरियाणा चुनाव लड़ने में उनका नजरिया साफ रहेगा। राष्ट्रीय राजनीति में केजरीवाल का कद जो भी हो, पर उनके इस इस्तीफे की पेशकश ने उन्हें ऊंचा अवश्य किया है।

अमृतलाल माकू, ईमेल से

बोली की कीमत
3 सितंबर को 'खाली-पीली' कॉलम में 'बोल बचन करेंगा तबी ऊंचा पोस्ट मिलेंगा' शीर्षक से प्रकाशित लेख में खाली पीली दिलचस्प अंदाज में किसी दफ्तर के माहौल को पेश किया गया है। जिसके पास बोलने की कला हो, वह अपना काम किसी तरह से निकाल ही लेता है। सच्ची मेहनत और ईमानदारी के बजाय अपनी बोली के दम पर उच्च पद पाने या अपनी स्थिति को मजबूत करने वाले लोगों की कमी नहीं है।

कृतिका झा, ईमेल से

इनकी सुध लें
14 सितंबर को 'दो दूनी चार' कॉलम में 'प्राइवेट में पेंशन' शीर्षक से प्रकाशित लेख पढ़ा। प्राइवेट नौकरी करने वाला सिर्फ उन्हें ही समझा जाता है जो EPFO में रजिस्टर्ड हैं, जिनका फंड कटता है, जिन्हें ESI की सुविधा है। इनके अलावा दुकानों, फैक्ट्रियों जैसे असंगठित क्षेत्रों में काम करने वालों का नाम कहीं रजिस्टर्ड नहीं होता और न ही इन्हें जरूरी सुविधाएं मिल पाती हैं। फर्म जानबूझकर अपने यहां 10 से कम कर्मचारी दिखाते हैं, ताकि सुविधाएं न देनी पड़ें। इन कर्मचारियों को लेबर एक्ट का साथ नहीं मिल पाता है। सरकार इनकी सुध ले।

चंद्र प्रकाश शर्मा, रतनेश

nbtedit@timesofindia.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

अंतिम पत्र
हरियाणा में किसानों ने कहा, चुनाव में न मदद, न ही विरोध - एक खबर
- किसानों को नेताओं पर नहीं, अपने खेतों पर भरोसा।

दीप्ति अग्रवाल

THE SPEAKING TREE
और पढ़ने के लिए देखें
hindi.speakingtree.in

मशीनों की क़द्र करें, विश्वकर्मा की यही असली पूजा

हरीश बड़थ्वाल

यात्रा हवाई हो या समुद्री, जोखिम हमेशा बना रहता है। मशीनें कब बिगड़ जाएं, कहा नहीं जा सकता। इसी तरह के जोखिम सड़क और रेल मार्ग से यात्रा में भी होते हैं। यह तब है जब वाहन का हरेक पुर्जा दक्ष हाथों से बना होता है, कई बार डेस्टिन होती है उसकी। इन हालात में हम उस महाशक्ति की तरफ देखते हैं और नतमस्तक हो जाते हैं, जो पूरी दुनिया को चला रही। हमें सदा उस शक्ति की कृपा की जरूरत महसूस होती रहती है।

इसी अंदाज में आज देशभर में मनाई जा रही विश्वकर्मा पूजा को समझना होगा। आखिर हम सभी यंत्रों पर सवार तकनीकी के महासागर की यात्रा पर जो हैं। आदि ग्रंथों में चराचर सृष्टि के सृजन का मुख्य दायित्व ब्रह्मा का माना गया है। लेकिन, सांसारिक सरोकारों के संदर्भ में विचार करें तो विश्वकर्मा की भूमिका कमतर न थी। ब्रह्मा और विश्वकर्मा, दोनों की गणना देवों में होती है। सर्वोच्च वास्तुकार या शिल्पी के रूप में विश्वकर्मा की प्रतिष्ठा को लेकर विद्वान एकमत हैं। देवताओं के समस्त रथों और शस्त्रों के निर्माण का श्रेय उन्हीं को है। इंद्रदेव का वज्र उन्होंने ही बनाया। विश्वकर्मा वास्तु, हस्तकलाओं और कौशल के पितामह थे। चारों युगों में कालजयी लंका, जगन्नाथ मंदिर पुरी, द्वारका और इंद्रप्रस्थ की वास्तुकारी विश्वकर्मा की देन है। उनके चार हाथों वाली आदिकालीन मूर्तियों के कारण उन्हें सृजनशीलता में ब्रह्मा के समकक्ष माना जाता है।

कालांतर में यंत्रों के अभिष्ठाता के रूप में पूजे जाने वाले विश्वकर्मा की छवि शिल्पियों और यंत्र कर्मियों के इष्टदेव तक सिमट गई है। लेकिन, विश्वकर्मा पूजा का एक बड़ा बेहतरीन और तर्कसंगत महत्व यह है कि इस दिन सरकारी, गैर-सरकारी कार्यालयों और फैक्ट्रियों में, विशेषकर मशीनों पर काम करने वाले कर्मचारी यंत्रों और मशीनों की सफ़-सफ़ाई करते हैं। काम करने की जगह को संवारा, सजाया जाता है। फिर विश्वकर्मा पूजा की जाती है। इस दिन यंत्रों-औज़ारों को विश्राम देते हैं। उनसे कोई काम नहीं लेते। यह दिन होता है उनकी आराधना का।

विश्वकर्मा पूजन निजी वाहनों और अन्य मशीनों की सुध लेने का खास दिन बन रहा है। मशीनों का रख-रखाव ऐसा अनिवार्य कार्य है, जिसके लिए रोज़मर्रा के शिड्यूल में स्थान रखा जाना चाहिए अन्यथा एक दिन भयानक बड़ी मुसीबत आ सकती है। वाहन चलाने वाले रोज पाद कर्म, पिछली बार वाहन स्टार्ट करते समय क्या उन्होंने दिशा-निर्देशों के अनुसार इंजन ऑयल, ब्रेक ऑयल, फ्लूईड, टायर की हवा चेक की थी। मशीन चाहे आपके कार्यस्थल की हो या घर के इस्तेमाल की, उसकी कद्र करें। इसकी नियमित संवार से आप इसके प्रति क

पूर्वजों को स्मरण करने का पर्व है पितृपक्ष

श्राद्ध का मतलब है— श्रद्धा से किया गया कृत्य। इसमें पिंडदान और तर्पण किया जाता है। आइए पितृपक्ष में हम प्रार्थना करें और अपने पूर्वजों को धन्यवाद दें। इस अवधि में अपने पितरों के लिए प्रार्थना और ध्यान करना भी पर्याप्त है। ऐसा कहा जाता है कि जब आप ध्यान करते हैं तो उसका पुण्य हमारी सात पीढ़ियों तक पहुंचता है।

पितृ पक्ष (17 सितंबर से 02 अक्तूबर) पर विशेष

अध्यात्म

श्री श्री रविशंकर

पितृपक्ष, उन सभी पूर्वजों को याद करने का समय है, जो इस दुनिया से गुजर चुके हैं। अकसर, जिस तिथि को किसी का शरीर शांत होता है, उसी तिथि को उनके लिए श्राद्ध किया जाता है। पितृपक्ष के सोलह दिनों के भीतर किसी भी एक दिन सभी पितरों को याद करके उपवास किया जाता है या उनकी याद में कोई अच्छा काम किया जाता है।

गरुड़ पुराण में कहा गया है कि आत्मा शरीर से निकलने के बाद, दस दिनों तक प्रेत योनि में निवास करती है क्योंकि परिवर्तन काल इतना बड़ा होता है कि आत्मा भ्रमित हो जाती है। अब जब शरीर छूट गया है, तो आत्मा उस शरीर में लौटना नहीं चाहती क्योंकि शरीर अब उसे अशुद्ध लगता है। लेकिन आत्मा को दूसरी दुनिया की आदत नहीं होती और वह बीच में होती है, इसे प्रेत योनि कहा जाता है। फिर कुछ समय के बाद जब वह इस बीच की स्थिति की अभ्यस्त हो जाती है, तब और आगे बढ़ जाती है।

जब किसी की मृत्यु हो जाती है, तो उनके परिवारजन या पुजारी कहते हैं कि 'आप शरीर नहीं हैं, आप मन नहीं हैं, आप बुद्धि नहीं हैं; इससे आगे बढ़ें। शरीर के पृथ्वी तत्व को इस संसार के पृथ्वी तत्व में मिल जाने दें। इसके जल तत्व को संसार के जल तत्व में विलीन हो जाने दें और इस मृत शरीर को अग्नि तत्व को ग्रहण कर लेने दें।' इस तरह से मृत शरीर को वापस प्रकृति में विलीन कर देते हैं। शरीर छोड़ने के बाद आत्मा को इस ज्ञान से आगे के संसार में जाने में सहायता मिलती है।

अब तक आत्मा अपने शरीर की पहचान पर टिकी हुई थी लेकिन अब यह कहती है, 'मैं यह शरीर नहीं हूं, फिर मैं कौन हूं?' इस सजगता के साथ आत्मा ज्ञान रूपी 'मौ' की पूंछ पकड़कर भवसागर रूपी 'वैतरणी नदी' पार कर जाती है।

श्राद्ध का मतलब है– श्रद्धा से किया गया कृत्य। इसमें पिंडदान और तर्पण किया जाता है। 'पिंड' का मतलब है शरीर; और 'ब्रह्मांड' अव्यक्त, निर्गुण और निराकार चेतना है। आत्मा को ब्रह्मांड में रहते हुए पिंड की आशा रहती है और पिंड में रहते हुए, ब्रह्मांड की आशा रहती है; यही मानव स्वभाव है। जब आत्मा शरीर छोड़कर निर्गुण, निराकार ब्रह्मांड में समा जाती है, तब भी सूक्ष्म शरीर या कारण शरीर को ऐसा लगता है कि उसने कुछ खो दिया है। उसका ऐसा भाव कुछ समय तक बना रहता है। इसी कारण सूक्ष्म शरीर की इच्छा होती है कि उसे एक शरीर मिल जाए। कई बार पिंड या शरीर पाने की यह वासना छूटती नहीं है। जब ब्रह्मांड में जाने के बाद भी पिंड की चाह मन में बनी रहती है तो श्राद्ध के माध्यम से पितरों के पुत्र या पुत्री ऐसा कहते हैं कि 'आपको पिंड मिल जाएगा। आप चिंता न करें, हम पिंडदान देंगे।'

पितृपक्ष में पिंडदान और तिल का तर्पण करने का बहुत महत्व है। तर्पण का मतलब है–'पूरा होना, आगे बढ़ना।' ऐसा समझा जाता है कि तर्पण पूर्ण हो जाने पर जो पितृ, प्रेत योनि के इस मध्य चरण में रह गए थे, वे पितृ लोक में चले गए हैं और अपने अन्य पूर्वजों जैसे दादा-दादी, नाना-नानी आदि से मिल गए हैं। तिल सबसे छोटी चीज है और यह दर्शाता है कि आपकी इच्छाएं तिल के समान बहुत छोटी हैं। संसार में जो कुछ भी है, वह तिल के समान तुच्छ और महत्वहीन है। इसलिए यदि मृत्यु के बाद भी व्यक्ति की आत्मा में इच्छाएं और वासनाएं रह गई हों, तो उसके सगे-संबंधी जल के साथ तिल को छोड़कर तर्पण करते हैं और अपने पितरों से यह कहते हैं कि वे इसी प्रकार तिल के बीज की तरह मन की छोटी-छोटी इच्छाओं, वासनाओं, राग और द्वेष को त्याग दें। और उनके जीवन में जो भी अधूरे कार्य थे, उन्हें अपनी संतानों या सगे-संबंधियों पर छोड़ दें; वे उसका ध्यान रखेंगे। पितरों की संतानें या संबंधी उनसे प्रार्थना करते हैं कि पितृ संतुष्ट रहें और आगे बढ़ें। स्वजनों और संबंधियों का यह प्रोत्साहन, तर्पण का एक महत्वपूर्ण अंग है।

पितृपक्ष में प्रार्थना करें और अपने पूर्वजों को धन्यवाद दें। इस समय में अपने पितरों के लिए प्रार्थना और ध्यान करना भी पर्याप्त है। ऐसा कहा जाता है कि जब आप ध्यान करते हैं तो उसका पुण्य हमारी सात पीढ़ियों तक पहुंचता है और हमारे जो पितृ इस संसार को छोड़कर आगे की यात्रा पर चले गए हैं, उन्हें भी शांति मिलती है। साथ ही हमारे देश में हर उत्सव के साथ 'सेवा' जुड़ी होती है इसलिए इस समय लोग बूढ़ों, महिलाओं, बच्चों और गायों की सेवा करते हैं। इस तरह से यदि पितृपक्ष के समय आप और कुछ नहीं भी कर पाते तो केवल ध्यान और सेवा करना भी पर्याप्त है।

इस तरह की प्रथाएं लगभग सभी देशों में पाई जाती हैं। वहां भी ऐसे कुछ दिन होते हैं, जिनमें लोग अपने पूर्वजों को याद करते हैं; उनके लिए भोजन बनाते हैं और दान देकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। ऐसी प्रथाएं दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रीय लोगों और चीन में भी हैं। पितृपक्ष में यह प्रथाएं इसलिए होती हैं ताकि पितरों को स्मरण किया जा सके और उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया जा सके।

आस्था-अनास्था

डॉ. संजीव कुमार शर्मा

रहस्यमयी प्रवृत्तिवाले होते हैं आश्लेषा नक्षत्र के जातक

आश्लेषा नक्षत्र के जातक का व्यक्तित्व कैसा होता है?

-सुयोधन, कुरुक्षेत्र

आश्लेषा नक्षत्र से संबंधित सभी राशियों में विष तत्व होने के कारण यह नक्षत्र अपने शत्रुओं को नष्ट करने के लिए विष उत्पन्न करनेवाला होता है। इस नक्षत्र में स्थित सभी ग्रहों के कारक तत्वों में विष होता है। उदाहरण के लिए चतुर्थ भाव के स्वामी के चतुर्थ भाव में होने पर मानसिक शांति समाप्त हो सकती है।

इसका संबंध परिवर्तन से भी है। जिस प्रकार सांप अपनी त्वचा को छोड़ते समय अपनी आंखें बंद होने के कारण शीत निद्रा में चला जाता है। उसी प्रकार आश्लेषा नक्षत्र में दृष्टि दनवीय हो जाती है। इस नक्षत्र में मंगल नीच का होता है, जो अपनी नकारात्मक ऊर्जा से कार्य करता है और बिना चोट पहुंचाए भी नुकसान पहुंचा देता है। आर्द्रा, ज्येष्ठा और मूल की तरह आश्लेषा नक्षत्र एक तीक्ष्ण नक्षत्र है।

आश्लेषा नक्षत्र एक अधोमुखी नक्षत्र है, जिसका मुख नीचे की ओर होता है। चालबाजी करनेवाले, अंडरवर्ल्ड और संदिग्ध लोगों जैसी सभी भूमिगत गतिविधियां इस नक्षत्र के अंतर्गत आती हैं।

इस नक्षत्र से संबंधित देवता नाग हैं। यह नक्षत्र आकस्मिकता से जुड़े होने के कारण लोगों को हैरान करने की क्षमता रखता है। इन जातकों में दुर्घटना की संभावनाएं भी होती हैं। इस नक्षत्र का स्वामी बुध होता है। इस नक्षत्र में जन्म लेनेवाले जातकों पर बुध का प्रभाव देखने को मिलता है। बुध के प्रभाव के कारण इस नक्षत्र में जन्म लेनेवाले लोगों की वाणी काफी मधुर होती है। इस कारण इनकी बातों से लोग मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। ऐसे लोग अपने दोस्तों के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। आश्लेषा नक्षत्र के जातक अत्यधिक अहंकारी होते हैं। इस नक्षत्र के चार चरणों के अलग-अलग प्रभाव होते हैं।

प्रथम चरण : इस नक्षत्र का पहला चरण धनु नवांश में आता है और बृहस्पति द्वारा शासित होता है। इस चरण में जन्म लेनेवाले जातक देखभाल करनेवाले और भावुक होते हैं। यह लोग अकसर दूसरों की भलाई करने के लिए तत्पर रहते हैं।

द्वितीय चरण : इसका दूसरा चरण मकर नवांश में आता है और शनि द्वारा शासित होता है। इस चरण में जन्मे लोग चतुर होते हैं। यह लोग अपने फायदे के लिए दूसरों का इस्तेमाल करने से नहीं चूकते।

तृतीय चरण : इसका तीसरा चरण कुंभ नवांश में आता है और शनि द्वारा शासित होता है। इस चरण में जन्म लेनेवाले बहुत ही रहस्यमयी होते हैं।

चतुर्थ चरण : इस नक्षत्र का चौथा चरण मीन नवांश में आता है और बृहस्पति द्वारा शासित होता है। इस चरण में पैदा हुए लोग कुछ भी गलत होने की जिम्मेदारी खुद ले लेते हैं।

पितृ पक्ष

पितृपक्ष-परंपरा का आरंभ दानवीर कर्ण के कारण हुआ

भाद्रपद मास की पूर्णिमा से आश्विन मास की अमावस्या तक मनाए जानेवाले सोलह दिन के 'पितृपक्ष' में किए जानेवाले श्राद्ध हमारी सनातन परंपरा का हिस्सा हैं। श्राद्ध का विस्तार से उल्लेख द्वापर युग में महाभारत काल में मिलता है। महाभारत के अनुशासन पर्व में भीष्म पितामह की युधिष्ठिर के साथ श्राद्ध के संबंध में विस्तार से चर्चा है। महाभारत काल में सबसे पहले श्राद्ध का उपदेश अत्रि मुनि ने महर्षि निमि को दिया था। इसे सुनने के पश्चात ऋषि निमि ने अपने पुत्र का श्राद्ध किया। इसके अलावा महाभारत के युद्ध के बाद श्रीकृष्ण के कहने पर पांडव अपने मृतक परिजनों का श्राद्ध सोमवती अमावस्या के दिन करना चाहते थे, जिससे उन्हें मुक्ति मिल सके। लेकिन उनके जीवनकाल में सोमवती अमावस्या कभी नहीं आई। इससे क्रोधित होकर युधिष्ठिर ने सोमवती अमावस्या को श्राप दिया कि आगे से वर्ष में एक बार सोमवती अमावस्या अवश्य आएगी। यही नहीं, इससे पूर्व त्रेता युग में सीता द्वारा दशरथ के पिंडदान की कथा भी सर्वविदित है।

लेकिन पितृपक्ष की शुरुआत महारथी कर्ण के जीवन से जुड़ी है। ऐसी मान्यता है कि कर्ण की मृत्यु के बाद जब उनकी आत्मा स्वर्ग लोक पहुंची, तो उन्हें खाने के लिए सोना और गहने दिए गए। कर्ण को समझ नहीं आया कि उन्हें भोजन की जगह सोना क्यों दिया जा रहा है। उन्होंने देवराज इंद्र से पूछा कि उनके साथ ऐसा व्यवहार क्यों हो रहा है। तब इंद्रदेव ने उन्हें बताया कि उन्होंने अपने पूरे जीवन में स्वर्ण का ही दान किया, कभी अन्न-जल का दान नहीं किया है। यही नहीं उन्होंने कभी अपने पूर्वजों का तर्पण और पिंडदान भी नहीं किया है। यह सुनकर कर्ण ने कहा कि उसे अपने पूर्वजों के संबंध में कुछ ज्ञात नहीं था, इसलिए उसने कभी तर्पण और पिंडदान नहीं किया। यह सुनकर इंद्र ने कर्ण को उसकी गलती सुधारने का अवसर देते हुए सोलह दिनों के लिए वापिस पृथ्वी लोक पर भेजा। पृथ्वी पर आकर कर्ण ने एक बार सोमवती अमावस्या अवश्य आएगी। यही नहीं, इससे पूर्व त्रेता युग में सीता द्वारा दशरथ के पिंडदान की कथा भी सर्वविदित है।

लेकिन पितृपक्ष की शुरुआत महारथी कर्ण के जीवन से जुड़ी है। ऐसी मान्यता है कि कर्ण की मृत्यु के बाद जब उनकी आत्मा स्वर्ग लोक पहुंची, तो उन्हें खाने के लिए सोना और गहने दिए गए। कर्ण को समझ नहीं आया कि उन्हें भोजन की जगह सोना क्यों दिया जा रहा है। उन्होंने देवराज इंद्र से पूछा कि उनके साथ ऐसा व्यवहार क्यों हो रहा है। तब इंद्रदेव ने उन्हें बताया कि उन्होंने अपने पूरे जीवन में स्वर्ण का ही दान किया, कभी अन्न-जल का दान नहीं किया है। यही नहीं उन्होंने कभी

अश्वनी कुमार

सप्ताह के व्रत-त्योहार 17 सितंबर से 23 सितंबर 2024

17 सितंबर (मंगलवार) : भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी प्रातः 11.45 मिनट तक। अनंत चतुर्दशी व्रत। श्री सत्यनारायण व्रत। कदली व्रत-पूजन। प्रोष्ठपदी-महालय श्राद्ध प्रारंभ। पूर्णिमा का श्राद्ध। पंचक।

18 सितंबर (बुधवार) : भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा प्रातः 08.05 मिनट तक। भाद्रपद पूर्णिमा स्नान दान आदि। श्राद्ध (पितृपक्ष) प्रारंभ। प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध। आश्विन कृष्ण प्रतिपदा तिथि का क्षय। पंचक।

19 सितंबर (गुरुवार) : आश्विन कृष्ण द्वितीया रात्रि 12.40 मिनट तक पश्चात। पंचक समाप्त रात्रि 05.15 मिनट (सूर्योदय पूर्व)। द्वितीया तिथि का श्राद्ध।

20 सितंबर (शुक्रवार) : आश्विन कृष्ण तृतीया रात्रि 09.16 मिनट तक। तृतीया का श्राद्ध। गंडमूल रात्रि 02.43 मिनट तक।

21 सितंबर (शनिवार) : आश्विन कृष्ण चतुर्थी सायं 06.14 मिनट तक। श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चतुर्थी श्राद्ध। भरणी श्राद्ध।

22 सितंबर (रविवार) : आश्विन कृष्ण पंचमी अपराह्न 03.44 मिनट तक। चंद्र षष्ठी व्रत। पंचमी का श्राद्ध। दक्षिण गोल प्रारंभ।

23 सितंबर (सोमवार) : आश्विन कृष्ण षष्ठी दोपहर 01.51 मिनट तक। षष्ठी एवं सप्तमी का श्राद्ध। शक आश्विन प्रारंभ।

पं. ऋभुकांत गोस्वामी

भेजें अपने सवाल

स्वर्ग-नरक की कल्पना का आधार क्या है?

पाप क्या है, पुण्य क्या है? धर्म क्या है, अधर्म क्या है? ईश्वर की आराधना कैसे करें? ऐसे सवाल अकसर हमारे मन में उठते हैं, पर इनका जवाब हमारे पास नहीं होता। मन-मस्तिष्क में आने वाले ऐसे ही सवालों के जवाब हमारे पैनल में शामिल धर्माचार्य आपको देंगे।

अपने सवाल हमें इस पते पर भेजें- धर्मक्षेत्र, हिन्दुस्तान, 11वां तल, द आइकॉन टॉवर, एफ सी-24 सी, फिल्म सिटी, सेक्टर-16ए, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर-201301 (उत्तर प्रदेश)

जीवन में कामना-पूर्ति के लिए होते हैं अलग-अलग श्राद्ध

श्राद्ध

हिंदू धर्म ग्रंथों के अनुसार केवल पितृपक्ष में ही नहीं, बल्कि अन्य अवसरों पर भी पितरों का श्राद्ध किया जा सकता है। 'धर्मसिंधु' के अनुसार श्राद्ध करने के 96 अवसर बताए गए हैं। एक साल की 12 अमावस्याएं, चार युगादि तिथियां, 14 मन्वादि तिथियां, 12 संक्रांतियां, 12 वैधृति योग, 12 व्यतिपात योग, 16 पितृपक्ष, पांच अष्टका श्राद्ध, पांच अन्वष्टका श्राद्ध तथा पांच पूर्वेद्युः श्राद्ध। कुल मिलाकर श्राद्ध के ये 96 अवसर हैं।

इसके अलावा हमारे धर्मशास्त्रों में श्राद्ध के अनेक भेद बताए गए हैं। उनमें से मत्स्य पुराण में तीन प्रकार के श्राद्ध, यम स्मृति में पांच प्रकार के श्राद्ध तथा भविष्य पुराण में बारह प्रकार के श्राद्धों का उल्लेख मिलता है। ये बारह श्राद्ध हैं–

नित्य श्राद्ध : रोज किया जानेवाला तर्पण, भोजन के पहले गौ ग्रास निकालना नित्य श्राद्ध है।

नैमित्तिक श्राद्ध : पितृपक्ष में किया जानेवाला श्राद्ध 'नैमित्तिक श्राद्ध' कहलाता है।

काम्य श्राद्ध : अपनी किसी विशिष्ट कामना की पूर्ति के लिए किए जानेवाला श्राद्ध 'काम्य श्राद्ध' की श्रेणी में आता है।

वृद्धि श्राद्ध : मुंडन, उपनयन, विवाह आदि के अवसर पर किया जानेवाला श्राद्ध 'वृद्धि श्राद्ध' कहलाता है। इसे नान्दीमुख भी कहते हैं।

पार्वण श्राद्ध : अमावस्या या पर्व के दिन किए जानेवाले श्राद्ध को 'पार्वण श्राद्ध' कहा जाता है।

सपिंडन श्राद्ध : मृत्यु के बाद प्रेतगति से मुक्ति के लिए मृतक के पिंड को पितरों के पिंड में मिलाना 'सपिंडन श्राद्ध' है।

गोष्ठी श्राद्ध : गौशाला में वंशवृद्धि के लिए किया जानेवाला श्राद्ध 'गोष्ठी श्राद्ध' है।

शुद्धयर्थ श्राद्ध : प्रायश्चित के रूप में अपनी शुद्धि के लिए ब्राह्मणों को भोजन कराना 'शुद्धयर्थ श्राद्ध' कहलाता है।

कर्माग श्राद्ध : गर्भाधान, सीमंत, पुंसवन

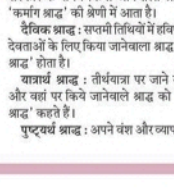

संस्कार के समय किया जानेवाला श्राद्ध कर्म 'कर्माग श्राद्ध' की श्रेणी में आता है।

दैविक श्राद्ध : सप्तमी तिथियों में हविष्यान्न से देवताओं के लिए किया जानेवाला श्राद्ध 'दैविक श्राद्ध' होता है।

यात्रार्थ श्राद्ध : तीर्थयात्रा पर जाने से पहले और वहां पर किये जानेवाले श्राद्ध को 'यात्रार्थ श्राद्ध' कहते हैं।

पुष्ट्यर्थ श्राद्ध : अपने वंश और व्यापार आदि की वृद्धि के लिए किया जानेवाला 'पुष्ट्यर्थ श्राद्ध' कहलाता है।

भविष्य पुराण में मुनि विश्वामित्र का दृष्टांत देकर 12 प्रकार के श्राद्धों का वर्णन किया गया है। विष्णु पुराण और गरुड़ पुराण में भी श्राद्ध संबंधी संदर्भ हैं। ऐसी भी मान्यता है कि पितरों की तृप्ति और मुक्ति के निमित्त दो यज्ञ किए जाते हैं, जो पिंड पितृयज्ञ तथा श्राद्ध कहलाते हैं।

इसके अलावा पितृपक्ष में श्राद्ध कर्म करने के साथ-साथ 'पंचबलि' या 'पंच ग्रास' देने का भी विधान है, जिसमें ब्राह्मण भोज के साथ गाय, कुत्ता, कौआ, चींटी और देवताओं के निमित्त भी भोजन निकाला जाता है। इनमें गाय 'पृथ्वी' तत्व, कुत्ता 'जल' तत्व, कौआ 'वायु तत्व', चींटी 'अग्नि' तत्व और देवता 'आकाश' तत्व के प्रतीक हैं। इस प्रकार इन पांचों को आहार देकर हम प्रकृति के पांच तत्वों के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं।

अरुण कुमार जैमिनि

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : मन प्रसन्न तो रहेगा, परंतु मन परेशान भी हो सकता है। सेहत का ध्यान रखें। किसी मित्र से कारोबार का प्रस्ताव मिल सकता है।

वृष : आत्मसंयम रहें। व्यर्थ के क्रोध व वाद-विवाद से बचें। बातचीत में भी संयत रहें। परिवार का साथ मिलेगा। पठन-पाठन में रुचि रहेगी। कारोबार से आय में वृद्धि।

मिथुन : मन अशांत तो रहेगा। फिर भी कारोबारी कार्यों में मन लगेगा। शैक्षिक कार्यों में कठिनाई आ सकती है। नौकरी में अफसरों से सद्भाव बनाकर रखें।

कर्क : मन परेशान तो रहेगा। फिर भी वाणी के प्रभाव में वृद्धि होगी। वाणी के प्रभाव से सभी कार्य पूर्ण होंगे। कारोबार में बदलाव के योग बन रहे हैं। दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

सिंह : मन प्रसन्न तो रहेगा। फिर भी धैर्यशीलता बनाए रखें। माता-पिता की सेहत का ध्यान रखें। जीवनसाथी का साथ मिलेगा। मित्रों का भी सहयोग मिलेगा।

कन्या : मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। परिवार में भी शांति बनाए रखें। नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे।

तुला : मन प्रसन्न रहेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के अवसर मिलेंगे, परंतु खर्चों में वृद्धि भी होगी। सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा।

वृश्चिक : पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। शैक्षिक कार्यों में सफल रहेंगे। बौद्धिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी तथा आय में वृद्धि भी हो सकती है।

धनु : मन अशांत रहेगा। संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध व वाद-विवाद से बचें। नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। शासन सत्ता का सहयोग भी मिलेगा।

मकर : मन परेशान हो सकता है। आत्मसंयत रहें। क्रोध से बचें। माता की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। रहन-सहन अव्यवस्थित रहेगा। खर्चों में वृद्धि।

कुंभ : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। मन में नकारात्मक विचारों से बचें। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। मित्र के सहयोग से कारोबार के अवसर मिल सकते हैं।

मीन : मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं, परंतु कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के साथ किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

वर्ग पहेली : 7728

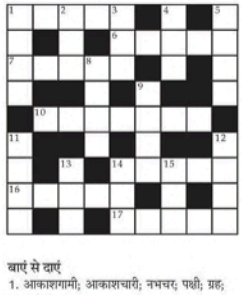

बाएं से दाएं

1. आकाशगामी; आकाशचारी; नभचर; पक्षी; ग्रह; नक्षत्र (5)
6. धुआं खींचना; चिलम का कश लेना (2,3)
7. बहरा होने की स्थिति; सुनाई न देने का रोग (5)
10. खरखटाना; ठक-ठक करना; दस्तक देना (4,3)
14. जो मन को भाए; मन को भानेवाला; प्यारा; प्रिय (5)
16. चारों तरफ नजर रखनेवाला; निगरानी करनेवाला; पर्यवेक्षण करनेवाला (5)
17. पारा; महादेव; शिव (5)

ऊपर से नीचे

1. अव्यवस्था; अव्यवस्थित; खराब; दंगा (4)
2. चोचला; दिखावटी इनकार; हाव-भाव (3)
3. दशन; दांत (3)
4. दग्ध होना; आग लगना; ईर्ष्या करना (3)
5. आश्विन महीने का अंधेरा पक्ष; पितृपक्ष; श्राद्ध (4)
8. जांच करना; पता लगाना; पहचानना; कसौटी पर कसना (4)
9. अच्छे विषयों को चुनकर एकत्र किया जाना; संकलित पुस्तक; संग्रह; ढेर (4)
11. आपदाहीन; निर्विघ्न; सुरक्षित (4)
12. बिना थके; लगातार (4)
13. उत्तेजना; उन्माद; गुस्सा; जोश; भावावेश (3)
14. घड़ियाल; मगर; बारह राशियों में से एक (3)
15. दौड़ना; डरना; बचना; जान छुड़ाना (3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली 7727 का उत्तर

■	[1]व्य	[2]प	[3]रि	[4]क	■	[5]सं	■	[6]प
[7]अ	■	[8]र	■	[9]म	ह	क	दा	र
[10]प	न	प	ना	■	■	र	■	ली
मा	■	[11]रि	■	[12]धी	■	■	[13]धी	क
नि	■	[14]क	ह	र	दा	[15]न	■	सि
[16]ता	धा	■	■	स	■	ग	■	धा
क	■	[17]भ	■	■	[18]ह	वा	या	र
[19]प	स	ही	न	[20]ता	■	रि	■	ना
ना	■	न	■	[21]ता	म	क	ना	■

सुडोकू : 7711

* कठिन

				3			5	4
		4	2					
	3		4	6				
5					3		8	7
	4						6	
8	1		9					3
				5	7		3	
					9	4		
1	8			2				

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल : सुडोकू नं.7710

4	6	7	8	5	3	1	9	2
5	1	9	2	6	7	4	3	8
3	8	2	9	1	4	7	5	6
1	4	6	3	9	2	5	8	7
2	9	5	1	7	8	3	6	4
8	7	3	6	4	5	9	2	1
6	5	8	7	3	1	2	4	9
7	2	4	5	8	9	6	1	3
9	3	1	4	2	6	8	7	5

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

17 सितंबर, मंगलवार, शक संवत: 26 भाद्रपद (सौर) 1946, **पंजाब पंचांग**: 02 आश्विन मास प्रविष्टे 2081, **इस्लाम**: 13 रबी-उल-अव्वल सन् 1446, **विक्रमी संवत्**: भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी प्रातः 11.45 मिनट तक। चंद्रमा कुंभ राशि में रात्रि 05.44 मिनट (सूर्योदय पूर्व) तक उपरांत मीन राशि में। **सूर्य दक्षिणायन** । शरद् ऋतु । अपराह्न 03 बजे से सायं 04.30 मिनट तक राहुकाल। अनंत चतुर्दशी व्रत। श्री सत्यनारायण व्रत। कदली व्रत-पूजन। प्रोष्ठपदी-महालय श्राद्ध प्रारंभ। पूर्णिमा का श्राद्ध। पंचक।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

कृपया यह बताएं कि वास्तु में वृक्षों का क्या महत्व है? किस दिशा में कौन-सा वृक्ष लगाना शुभ है?

-हरितिमा, बेगूसराय

- उत्तर दिशा में अशोक का वृक्ष लगाने से सुख-समृद्धि और शांति मिलती है। पूर्व दिशा में आंवले का पेड़ लगाना स्वास्थ्य एवं धन के लिए लाभदायक होता है। उत्तर पूर्व दिशा में तुलसी का पौधा लगाना शुभ फल प्रदान करता है। पश्चिम दिशा में जामुन का पौधा लगाना भवन की शुभता में वृद्धि करता है। उत्तर पूर्व दिशा में हरसिंगार का पौधा वास्तु शास्त्र के अनुसार शुभ रहता है। यदि पूर्व दिशा में कोई दोष हो तो वहां पर सूरजमुखी एवं गेंदे के पौधे लगाना लाभ देता है।

हिन्दुस्तान
1936

जीवन से खिलवाड़

आत्महत्या की हर घटना झकझोर जाती है, पर जब कोई प्रतिभावान युवा अपनी जान लेता है, तो यह न केवल त्रासद, बल्कि पूरे देश-समाज के लिए नुकसानदायक बात है। बड़े दुख की बात है कि दिल्ली में मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज के 25 वर्षीय स्नातकोत्तर मेडिकल छात्र को उसके कमरे में मृत पाया गया। प्रथम दृष्टया, ऐसा लग रहा है कि छात्र ने फांसी लगाकर आत्महत्या की है, लेकिन पुलिस को व्यापकता में जांच करनी चाहिए और हर आशंका को परखना चाहिए। जानना जरूरी है कि आखिर एक टॉपर छात्र ऐसे मुकाम पर कैसे पहुंच गया? वह रेडियोलॉजी का द्वितीय वर्ष का छात्र था और उसे बेहतरीन विशेषज्ञ डॉक्टर बनना था। लोग यह भूले नहीं थे कि पंजाब का यह छात्र साल 2017 में राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (एनईईटी या नीट) का टॉपर था। उसके पिता सरकारी स्कूल के प्रिंसिपल हैं और छोटा भाई भी मेडिकल की पढ़ाई कर रहा है। जिस परिवार ने अपना होनहार खोया है, उसके साथ सबकी संवेदना होनी चाहिए।

ऐसी घटनाएं समाज को विचलित कर देती हैं। समाज विज्ञानियों और चिकित्सकों को मिलकर अध्ययन करना चाहिए। ध्यान रहे, दिल्ली में ही 27 अगस्त को ओल्ड रेजिडेंट डॉक्टर हॉस्टल में एक 20 वर्षीय मेडिकल छात्र का शव मिला था। छात्रों के बीच भी यह सवाल बार-बार उठ रहा होगा। क्या निराशा इतनी बढ़ गई है कि अपनी जीवन में पढ़ाई के झंडे गाड़ने वाले छात्रों को भी अपना भविष्य स्याह लग रहा है? इस साल फरवरी के महीने में यह आंकड़ा सामने आया था कि पिछले पांच वर्षों में कम से कम 122 मेडिकल छात्रों ने आत्महत्या की है, जिनमें से 64 एमबीबीएस में और 58 स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों अध्ययनरत थे। यह संख्या कम नहीं है। एक भावी चिकित्सक को ऊर्जा और उत्साह से भरपूर होना चाहिए, क्योंकि उसे लोगों की सेवा के लिए समर्पित होना है। उसे चिकित्सक बनने का मौका मिला है और अच्छे चिकित्सकों को लोग भगवान की तरह आदर देते हैं। सम्मानजनक जिंदगी की ओर जा रहे छात्रों के दिलोदिमाग में निराशा का एक कतरा नहीं होना चाहिए, पर हर महीने औसतन दो मेडिकल छात्र आत्महत्या कर लेते हैं?

सम्मानजनक जिंदगी की ओर बढ़ रहे छात्रों के मन में निराशा का एक कतरा नहीं होना चाहिए, पर हर महीने औसतन दो मेडिकल छात्र आत्महत्या कर लेते हैं।

राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग ने इस साल फरवरी में यह भी बताया था कि पांच साल में 1,270 मेडिकल छात्रों ने बीच में ही पढ़ाई छोड़ दी। एक और तथ्य गौरतलब है कि पढ़ाई छोड़ने वालों में से 153 विद्यार्थी एमबीबीएस कर रहे थे और 1,117 ने स्नातकोत्तर के दौरान पढ़ना छोड़ दिया। मतलब, विशेषज्ञ चिकित्सक बनने का मौका भी हाथ से निकलने दिया जा रहा है? क्या चिकित्सा शिक्षा का ध्यान रखने वाली जिम्मेदार संस्थाओं ने इन तथ्यों पर गहराई से गौर किया है? बेशक, छात्रों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत बढ़ती जा रही है। यह होनहार सिख छात्र भी शायद आत्महत्या न करता, अगर उसके पास संस्थान के होस्टल की सुविधा होती। वह अलग कमरा लेकर रह रहा था, तो हो सकता है, अकेलेपन की वजह से अवसाद में चला गया हो। आज छात्रों के सामने समस्याओं का अंबार है। ज्यादातर शिक्षा संस्थान छात्रों की मूलभूत सुविधाओं और मनोदशा से अंजान बने रहते हैं। ऐसे में, छात्रों को अपनी छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा करने के साथ ही अपनी मनोदशा को भी मजबूत रखना पड़ता है। आज शिक्षा संस्थानों के लिए ही नहीं, यह सरकार और समाज के लिए भी विशेष रूप से अपने घर-परिवार से दूर अकेले रहने वाले छात्रों की फिक्र का समय है।

हिन्दुस्तान HinduStan | 75 साल पहले 17 सितंबर, 1949

हवा का रुख

पाकिस्तानी प्रचारक इस बात का जोरों से प्रचार करते रहते हैं कि काश्मीर में जब कभी जनमत संग्रह होगा तो वहां के लोग निश्चय रूप से पाकिस्तान के साथ रहना पसन्द करेंगे। बाहरी दुनिया भी इस प्रचार के चक्कर में आ जाती है और मान बैठती है कि चूंकि काश्मीर में बहुमत मुसलमानों का है, इसलिए वे पाकिस्तान की छत्रछाया में रहना पसन्द करेंगे, जो एक मुस्लिम राष्ट्र है। किन्तु यह धारणा कितनी भ्रांतिकारक है, इसका पता तीन गांवों के उस निर्णय से चल जाना चाहिए, जो काश्मीर के गुरेज इलाके में युद्धबन्दी रेखा पर स्थित हैं। इस निर्णय से हवा के रुख का भली भांति अन्दाज किया जा सकता है।

काश्मीर में जो युद्धबन्दी रेखा निर्धारित होती है, उसमें किलशाई वाला गांव पाकिस्तानी प्रदेश में पड़ेगा। इस गांव के लोगों ने, जो सब के सब मुसलमान हैं, अपने घर-बार छोड़कर भारतीय सीमा के भीतर चले आने का निर्णय किया है। इस गांव के लोगों का जनमत लिया गया, तो पाकिस्तान के अफसरों को उन्हें समझाने का पूरा मौका दिया गया था। उन्होंने उन्हें हर तरह से पाकिस्तान की सीमा में अपने घरों में ठहरे रहने को समझाया, किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। दो आदमियों को छोड़कर बाकी सब, जिनकी संख्या २२१ है, भारतीय सीमा में ही बस जाने के अपने आग्रह पर कायम रहे। इस फैसले के समय पाकिस्तानी अफसरों के अलावा संयुक्त राष्ट्र संघ के निरीक्षक भी उपस्थित थे और इसलिए उसकी शुद्धता में किसी को सन्देह नहीं हो सकता। इस उदाहरण में तो पाकिस्तानी सीमा में पड़ने वाले गांव के लोग अपने घर-बार छोड़कर भारतीय सीमा में चले आये। दूसरे उदाहरण में ऐसे दो गांव हैं, जो इस समय पाकिस्तान की सीमा के अन्दर हैं, किन्तु उन्हें युद्धबन्दी रेखा निर्धारित होने के बाद भारतीय सीमा में आ जाना होगा। इन गांवों की आबादी करीब १००० है। इन लोगों की भी पाकिस्तान के अधिकारियों और संयुक्त राष्ट्र संघ के निरीक्षकों की मौजूदगी में राय ली गई। पाकिस्तान के एक सैनिक अधिकारी ने उन्हें समझाया कि भारत में जो मुसलमान रह गये हैं, उन्हें सताया जाता है और वे आगे-पीछे पाकिस्तान में आकर रहेंगे, किन्तु इस कथन का गांव वालों पर कोई असर नहीं पड़ा और उन्होंने भारतीय सीमा में ही रहने का फैसला किया।

नरेंद्र मोदी की तीसरी पारी के सौ दिन

यहां स्कैन करें

अनिल बलूनी | सांसद एवं राष्ट्रीय मीडिया प्रमुख, भाजपा

विकास के जितने काम अन्य सरकारें अमूमन वर्ष भर में करती हैं, उससे कहीं अधिक कार्यों को प्रधानमंत्री ने तीसरे कार्यकाल के पहले 100 दिनों में जमीन पर उतार दिया है।

यह सुखद संयोग है कि कल ही नरेंद्र मोदी सरकार 3.0 के 100 दिन पूरे हुए हैं और आज हमारे कर्मयोगी प्रधानमंत्री का जन्म दिवस है, जिसे पूरा देश सेवा दिवस के रूप में मना रहा है। जिस तरह से प्रधानमंत्री का पूरा जीवन जन-कल्याण और देश के विकास के लिए समर्पित रहा है, उसी तरह उनके इस कार्यकाल के बीते 100 दिन भी विकास और जन-कल्याण की दिशा में मील के पत्थर रहे हैं। एक अत्यंत गरीब परिवार में जन्म लेने के बाद अपनी प्रतिभा, लगन और विजन के बल पर एक आम कार्यकर्ता से मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री बनने तक के उनके जीवन संघर्ष एवं कर्तव्य बोध से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। उन्होंने गरीबी को जीया है, इसलिए उनकी हर योजना के केंद्र में गरीब कल्याण का भाव निहित रहता है। विकास के जितने काम कई अन्य सरकारें अमूमन पूरे वर्ष में करती हैं, उससे कहीं अधिक कार्यों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने तीसरे कार्यकाल के पहले 100 दिनों में जमीन पर उतार दिया है।

पहले ऐसा देखा गया है कि जब नई सरकार का गठन होता है, पहले 20-25 दिन तो नूं ही जश्न में निकल जाते हैं और एक-दो महीने बाद विकास योजनाओं पर काम शुरू हो पाता है, पर प्रधानमंत्री के जीवन का क्षण-क्षण इस देश के लिए समर्पित है। उन्होंने 2047 तक देश को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए जो संकल्प लिया है, उसकी बानगी उनके तीसरे कार्यकाल के पहले 100 दिनों में दिखती है। पहले 100 दिनों में विकास के जो महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं, उनकी आधारशिला प्रधानमंत्री ने लोकसभा चुनाव 2024 के लिए प्रचार अभियान की शुरुआत से पहले ही रख दी थी, जब उन्होंने अधिकारियों को मोदी सरकार 3.0 के 100 दिन के लिए कामकाज का टास्क दिया था, ताकि विकास की गति किंचित मात्र भी न रुके।

70 साल से अधिक उम्र के देश के सभी बुजुर्गों के लिए आयुष्मान भारत योजना को लागू करना हो या एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) की शुरुआत हो, चाहे इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स पर जोर हो या किसानों के कल्याण की बात, चाहे उद्योगों का विकास हो या गरीब कल्याण - प्रधानमंत्री ने अपनी सरकार 3.0 के पहले 100 दिन में कई क्रांतिकारी कदम उठाकर न केवल विकसित भारत के संकल्प को नया आयाम दिया है, बल्कि वैश्विक नीतियों के केंद्र में भारत को एक प्रमुख शक्ति के तौर पर भी स्थापित किया है।

प्रधानमंत्री ने एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) का शुभारंभ किया। पीएम आवास योजना के तहत अतिरिक्त तीन करोड़ घरों के निर्माण को मंजूरी दी है। हरित ऊर्जा के लिए नीतियां बनीं। पीएम ई-बस सेवा शुरू हुई और किसानों के लिए एमएसपी बढ़ाने के साथ-साथ कई काम किए गए।

सरकार ने बुनियादी संरचना पर फोकस रखते हुए 3 लाख करोड़ रुपये की परियोजनाओं को मंजूरी दी। इसमें वधावन का मेगा बंदरगाह भी शामिल है, जो दुनिया के टॉप 10 बंदरगाहों में से एक होगा। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के चौथे चरण में 62,500 किलोमीटर सड़क निर्माण को मंजूरी दी गई, जिससे लगभग 25 हजार गांवों को फायदा होगा। इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में पूंजीगत व्यय को बढ़ाकर 11.11 लाख करोड़ रुपये करने से रोजगार के अवसरों में भारी वृद्धि होगी। आठ नेशनल हाई-स्पीड रोड कॉरिडोर, आठ नई रेलवे लाइन और 12 नई औद्योगिक स्मार्ट सिटी बनाने की योजना मंजूर की गई। बीते 100 दिनों में 15 वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई गई है। कई हवाई अड्डों के विकास के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश और लद्दाख को जोड़ने वाली शिनखून ला सुरंग जैसी कई योजनाओं पर काम शुरू हुआ। इन परियोजनाओं का उद्देश्य देश में कनेक्टिविटी को बढ़ाना, आर्थिक विकास को तेज करना, रोजगार के अवसर उत्पन्न करना और जीवन को सरल बनाना है।

वह हमेशा कृषि एवं किसान कल्याण के लिए समर्पित रहते हैं। उन्होंने अपने तीसरे कार्यकाल की शुरुआत किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त जारी करके की। अब तक कुल 12 करोड़ 33 लाख किसानों के बीच 3 लाख करोड़ रुपये वितरित किए जा चुके हैं। उन्होंने सत्ता संभालते ही दूसरा सबसे बड़ा फैसला एमएसपी को लेकर किया। वर्ष 2024-25 के लिए खरीफ फसलों के एमएसपी में वृद्धि की गई, जिससे किसानों को लगभग 2 लाख करोड़ रुपये का लाभ हुआ है। आंध्र प्रदेश में पोलावरम सिंचाई परियोजना और कृषि क्षेत्र में दक्षता व उत्पादकता बढ़ाने के लिए डिजिटल कृषि मिशन सहित सात प्रमुख योजनाओं को भी मंजूरी दी गई। मौसम और जलवायु के अनुकूल भारत बनाने के लिए मिशन मौसम को शुरू किया गया, तो कृषि क्षेत्र में स्टार्टअप के लिए एग्रीस्टार नाम से नया फंड शुरू किया गया है।

मोदी सरकार 3.0 ने प्याज और बासमती चावल पर न्यूनतम निर्यात मूल्य हटाने और प्याज पर निर्यात शुल्क 40 फीसदी से घटाकर 20 फीसदी करने का फैसला किया, जिससे किसानों को फायदा होगा। जम्मू-कश्मीर में 3,300 करोड़ रुपये की कई कृषि योजनाएं और विकास परियोजनाएं शुरू की गईं। सहकारी चीनी मिलों को इथेनॉल उत्पादन इकाइयों को मल्टी-फीड सुविधा में बदला जाएगा। नेशनल कोऑपरेटिव ऑर्गेनिक्स लिमिटेड और उत्तराखंड ऑर्गेनिक कमोडिटी बोर्ड के बीच जैविक उत्पाद खरीदने को लेकर समझौता हुआ है, जिसके तहत मुनाफे का उचित हिस्सा सीधे किसानों के खातों में जमा किया जाएगा। पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना गेमचेंजर साबित हो रही है। नई राष्ट्रीय सहकारी नीति पर भी काम चल रहा है। इस साल जून में वाराणसी की अपनी पहली यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ने कृषि में उनकी भूमिका के लिए स्वयं सहायता समूहों की 30,000 कृषि सखियों को भी सम्मानित किया था। मोदी सरकार 3.0 के पहले 100 दिन में 113 नए मेडिकल कॉलेज खोलने की मंजूरी दी गई है। इससे देश में डॉक्टरों की कमी दूर होगी।

दुनिया को पता है, रूस-यूक्रेन युद्ध अगर कोई खत्म करा सकता है, तो वह नरेंद्र मोदी हैं। बिना भारत किसी प्रमुख बैठक की कल्पना नहीं की जा सकती, वैश्विक स्थिति में यह बदलाव बीते 10 साल में ही आया है।

कुल मिलाकर, समृद्ध, खुशहाल और विकसित होते भारत की अविरल कहानी में जहां विकास के नए मापदंड स्थापित हो रहे हैं, वहीं इसमें गांव, गरीब, किसान, दलित, पिछड़े, आदिवासी, युवा एवं महिलाओं के कल्याण का विजन भी समाहित है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मणिपुर में असम रायफल्स को लेकर जारी आंदोलन का सच

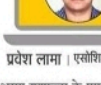

यहां स्कैन करें

प्रवेश लामा | एसोशिएट एडीटर, एचटी

मणिपुर के कांगपोकपी जिले में 22 असम रायफल्स के बटालियन मुख्यालय में सैनिकों ने रवानगी की तैयारी शुरू कर दी है। 20 सितंबर से उनकी जगह सीआरपीएफ के जवान ले लेंगे। जम्मू-कश्मीर में बढ़ती आतंकी घटनाओं के मद्देनजर केंद्र ने मणिपुर से 22 और 9 असम रायफल्स बटालियनों को वहां भेजने का आदेश दिया है। इन दोनों बटालियनों में लगभग 2,500 जवान हैं, जो अभी कांगपोकपी और चुराचांदपुर में तैनात हैं। ये दोनों पहाड़ी जिले हैं, जहां कुकी समुदाय की बहुसंख्या है। इन जवानों में से कई अपने नए मिशन को लेकर उत्साहित हैं, क्योंकि ऐसी चुनौतियों के लिए ही उनको प्रशिक्षित किया गया है। मगर एक समस्या भी है।

22 असम रायफल्स बटालियन के मुख्यालय के बाहर करीब 80 कुकी महिलाएं केंद्र सरकार के फैसले के खिलाफ धरने पर बैठ गई हैं। 20 सितंबर तक यह संख्या बढ़ भी सकती है, क्योंकि हर घर ने अपनी महिला को यहां भेजने का फैसला किया है। 'कम्युनिटी ऑन ट्राइबल यूनिटी' के बैनर तले महिलाओं ने एलान किया है कि वे गेट को बंद कर देंगी और सैनिकों को जाने नहीं देंगी। उनका मानना है कि असम रायफल्स के जवान ही मैतेई उग्रवादियों से उनकी रक्षा कर सकते हैं। मगर वहां से करीब 45 किलोमीटर दूर मैतेई महिलाओं की मदद से सैकड़ों छात्रों ने इंफाल के काकवा बाजार में भारत-म्यांमार मार्ग को जाम कर दिया है। वे भी धरने पर बैठे हैं, हालांकि उनकी छह मांगों में एक मांग यह है कि असम रायफल्स को मणिपुर से हटाया जाए। उनका कहना है, हिंसा अब भी इसीलिए जारी है, क्योंकि सुरक्षा बल कुकी उग्रवादियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं कर रहा। इन प्रदर्शनकारियों के मुताबिक, मणिपुर का इतिहास इसका गवाह है कि असम रायफल्स ने हमेशा मैतेई लोगों पर अत्याचार किया है।

कुकी महिलाएं राज्य से असम रायफल्स की रवानगी का विरोध कर रही हैं, तो मैतेई छात्र उनकी विदाई को लेकर आंदोलनरत हैं।

मणिपुर पिछली मई से जातीय हिंसा में जल रहा है। मैतेई को आदिवासी का दर्जा देने के अदालती फैसले (जिस पर रोक लगा दी गई) के खिलाफ आदिवासियों का विरोध-प्रदर्शन (कुकी के नेतृत्व में) जल्द ही दोनों समूहों के बीच जातीय संघर्ष में बदल गया। एन बीरेन सिंह सरकार के मैतेई समर्थक रुख से कोई मदद नहीं मिली और पुलिस बल व नौकरशाही में जातीय विभाजन के बाद माना यही गया कि असम रायफल्स की मौजूदगी ने ही यहां के हालात संभाले हैं। हालांकि, गुरुवार दोपहर असम रायफल्स के प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल विकास लखेड़ा ने प्रदर्शन कर रही महिलाओं को समझाया कि एक सैनिक के लिए आदेश-पालन अनिवार्य है और सीआरपीएफ भी उतनी ही सक्षम फोर्स है। मगर महिलाओं ने रोड खाली करने से इनकार कर दिया है। इस आशंका में कि कहीं सैनिक तय समय से पहले न चले जाएं, महिलाओं ने रात भी यहीं बिताने का फैसला किया है। वहां चाय बनाने की व्यवस्था के साथ-साथ बारिश से बचने के लिए टेंट भी लगा दिए गए हैं।

इस बीच, इंफाल में भी मैतेई छात्रों ने अपनी मांगें पूरी होने तक कक्षा में न जाने की कसम खाई है, जिसके कारण सरकार को कक्षाएं व परीक्षाएं निलंबित करनी पड़ी हैं। छात्रों ने इस बाबत एक ज्ञापन भी राज्यपाल को सौंपा है और अपनी मांगें माने जाने तक प्रदर्शन जारी रखने का एलान किया है।

पिछले 16 महीनों में पहली बार असम रायफल्स को यहां से हटाया जा रहा है। कई नौकरशाह मानते हैं कि विरोध और जवाबी-विरोध की यह पटकथा महीनों पहले लिखी गई थी। उनके मुताबिक, बेशक मणिपुर में असम रायफल्स को लेकर विवाद रहे हैं, लेकिन उसको लेकर इससे पहले इतनी रजनीति कभी नहीं हुई थी। यह सच है कि जम्मू-कश्मीर में सैनिकों की जरूरत है, लेकिन अभी इसको वहां से भेजने का फैसला गलत साबित हो सकता है। हालांकि, असम रायफल्स के एक जवान ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि यही एकमात्र सुरक्षा बल है, जिसके साथे तले कुकी और मैतेई मिलकर शांति बहाली के लिए काम कर रहे हैं। जब पहली बार यहां हिंसा फैली थी, तब दोनों समुदायों के 20,000 से अधिक लोगों को इसी सुरक्षा बल ने बचाया था। उसके मुताबिक, हम यहां आंतरिक सुरक्षा में लगे हुए हैं और हमारा कोई दुश्मन नहीं है। लिहाजा, यह अच्छा ही है कि हम में से कुछ जवान जम्मू-कश्मीर जा रहे हैं, क्योंकि देश की खातिर लड़ने के लिए वहां एक दुश्मन तो है।

मनसा वाचा कर्मणा

ऊब की जड़ों को खोजिए

यदि आप ऊब गए हैं, तो उसका कारण क्या है? वह है क्या, जिसको हम ऊब कहते हैं? ऐसा क्यों है कि आपकी किसी भी चीज में रुचि नहीं है? कुछ कारण अवश्य होने चाहिए, जिन्होंने आपको मंद बना दिया है। यदि आप यह जान सकें कि आप क्यों ऊब गए हैं, तो निस्संदेह आप समस्या का हल कर लेंगे। है न? तब जागी हुई अभिरुचि कार्य करने लगेगी।

हम अंदर से, मानसिक तौर पर पता लगा सकते हैं कि हम क्यों इतनी अधिक ऊब की अवस्था में हैं। हम यह भी देख सकते हैं कि हममें से अधिकांश क्यों इस हालत में हैं; हमने अपने को भावनात्मक रूप से और दिमागी तौर पर भी थकाकर निढाल कर लिया है; हमने इतनी सारी चीजों, अनुभूतियों, मनोरंजनों, प्रयोगों को आजमाया है कि हम जड़, क्लांत हो चुके हैं। यदि हम एक मनोवैज्ञानिक से असंतुष्ट हो जाते हैं, तो किसी दूसरे के पास या फिर किसी धर्मगुरु के पास चले जाते हैं; यदि वहां असफल होते हैं, तो किसी तीसरे आचार्य के पास और इसी प्रकार क्रम चलता रहता है। हम हमेशा दर-दर भटकते रहते हैं। लगातार खुद को तानने और फिर छोड़ देने की यह प्रक्रिया निढाल करने वाली होती है। क्या नहीं होती? दूसरी सभी उत्तेजनाओं की तरह यह शीघ्र ही मन को जड़ बना देती है।

हमने यही किया है। एक संवेदन से दूसरे संवेदन की ओर; एक उत्तेजना से दूसरी उत्तेजना की ओर तब तक भागते जाना, जब तक कि थककर हम निढाल न हो जाएं। तो, अब इसका एहसास होने पर आप और आगे न जाएं, कुछ विश्राम करें। शांत हों और मन को स्वयं अपने से शक्ति प्राप्त करने दें, उसे बाध्य न करें। जैसे पृथ्वी पुनः अपने को नूतन कर लेती है, उसी प्रकार जब मन को शांत होने दिया जाता है, तो वह अपने को नूतन कर लेता है। परंतु मन को शांत होने देना और इस सबके बाद उसे रिक्त रहने देना बड़ा दुष्कर है, क्योंकि मन हर समय कुछ-न-कुछ करते रहना चाहता है।

याद रखिए, समस्या तभी है, जब आप किसी स्थिति को जैसी वह है, वैसी आप स्वीकार नहीं करते और उसे बदलना चाहते हैं। इसका यह मतलब नहीं कि मैं संतोष करके बैठने की वकालत कर रहा हूं, बात इसके उलट है। यदि हम जो हैं, उसे स्वीकार कर लें, तो देखेंगे कि वह बात, जिससे हम भयभीत हैं; वह स्थिति, जिसे हम ऊब, निराशा या भय कहते हैं, वह पूरी तरह से बदल गई है! जिस स्थिति से हम भयभीत थे, उसका पूर्णतया परिवर्तन हो चुका है।

कुछ कारण अवश्य होने चाहिए, जिन्होंने आपको मंद बना दिया है। यदि आप यह जान सकें कि क्यों ऊब गए हैं, तो निस्संदेह इस समस्या का समाधान कर लेंगे।

अतः अपने सोच-विचार के तरीकों को, उनकी प्रक्रिया को समझना बड़ा महत्वपूर्ण है। स्वबोध किसी अन्य से, किसी पुस्तक, किसी मनोविश्लेषक द्वारा नहीं हो सकता। यह आपको स्वयं प्राप्त करना होगा।

जे कृष्णमूर्ति

शेखर कपूर | फिल्म निर्देशक

क्या आप एआई से डरते हैं? क्या आपको इससे डरना चाहिए? यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कैसे हैं- बदलाव को स्वीकार करने वाले, उसका स्वागत करने वाले या आप उसके विरोधी हैं; जहां हैं, वहीं खुश हैं।

अब जनता की अदालत में केजरीवाल

रविवार को अपने पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने दो दिन बाद अपने पद से इस्तीफा देने की घोषणा की। उनके इस एलान से सियासी जगत में हलचल मच गई है। ऐसा इसलिए, क्योंकि आबकारी नीति से जुड़े मामले में जब प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मुख्यमंत्री को गिरफ्तार किया, तभी से वह लगातार कह रहे थे कि पद से कतई इस्तीफा नहीं देंगे। जेल से ही उन्होंने सरकार चलाई भी। मगर सुप्रीम कोर्ट से जमानत पर छूटने के बाद उन्होंने अचानक इस्तीफा देने का मन बना लिया है, जिसके पक्ष और विपक्ष में तमाम तरह की दलीलें दी जा रही हैं। हालांकि, ऐसा करके उन्होंने एक तीर से कई निशाने साधने की कोशिश की है।

दरअसल, इस्तीफे की उनकी घोषणा एक सोची-समझी रजनीति है। वह इस बहाने एक तरफ जनता की सहानुभूति पाना चाहते हैं, तो दूसरी तरफ यह दिखाने की कोशिश में हैं कि जब तक मतदाता उनको ईमानदारी का प्रमाणपत्र नहीं देंगे, वह मुख्यमंत्री के पद पर नहीं बैठेंगे। इस घोषणा का कितना असर पड़ेगा, यह तो वक्त बताएगा, लेकिन लोकसभा चुनाव के दौरान उनका ऐसा एक दांव विफल साबित हुआ था और जनता ने उनकी बात को कमोबेश नकार दिया था। क्या इस बार भी ऐसा ही होगा? इसका जवाब हर कोई अपने हिसाब से दे रहा है, पर अरविंद केजरीवाल ने इस्तीफे का दांव चलकर साहस का परिचय जरूर दिया है। इसका असर दिल्ली ही नहीं, हरियाणा के विधानसभा चुनाव पर भी पड़ सकता है, जहां उनकी पार्टी सभी सीटों पर चुनाव लड़ रही है। हालांकि, राजनीतिक विश्लेषकों का मत है कि यहां आम आदमी पार्टी को बहुत फायदा नहीं होने वाला है, लेकिन मुकाबले को वह दिलचस्प जरूर बना रही है।

बहरहाल, अरविंद केजरीवाल की संलिप्तता शराब घोटाले में भले न हो, लेकिन विरोधी पार्टियों ने उनकी छवि खराब करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी है। आम जनता भी यह सब देख रही है, इसलिए केजरीवाल ने जनता के बीच ही जाने का एलान किया। वैसे भी, उनसे जब इस्तीफे की मांग लगातार की जा रही थी, तो अब पद छोड़ने का दांव खेलकर उन्होंने विपक्षी पार्टियों के हाथों से यह मुद्दा छीन लिया है। अब देखना यह है कि उनके इस कदम का दिल्ली और हरियाणा के चुनावी नतीजों पर क्या असर पड़ता है? हरियाणा विधानसभा का चुनावी नतीजा तो अगले महीने की शुरुआत में ही पता चल जाएगा, लेकिन दिल्ली के जनादेश के लिए अभी हमें कुछ वक्त इंतजार करना होगा।

हेमा हरि उपाध्याय, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम
अरविंद केजरीवाल

इस्तीफे का यह दांव विशुद्ध राजनीति

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को जब सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिली, तो कई शर्तें भी उन पर लगाई गई थीं। जैसे, वह मुख्यमंत्री कार्यालय नहीं जाएंगे, फाइलों पर दस्तखत नहीं करेंगे, केस को प्रभावित करने की कोई कोशिश नहीं करेंगे आदि। इसका मतलब है कि अधिकार के मामले में वह नख-दंत विहिन थे। यानी, मुख्यमंत्री के रूप में वह काम नहीं कर सकते थे, इसलिए उनके लिए इस्तीफे का रास्ता ही बचा था। वैसे भी, अगले चंद महीनों में यहां चुनाव होना है, तो जाहिर है, पूरा गुणा-भाग करने के बाद ही अरविंद केजरीवाल ने यह कदम उठाया है, जो विशुद्ध राजनीतिक है। वह अपनी जेल-यात्रा को भावनात्मक मुद्दा बनाना चाहते हैं, लेकिन क्या यह इतना आसान है, जितना उनको लग रहा होगा?

इस सवाल का जवाब ढूंढ़ने के लिए शुरुआती दिनों की उनकी राजनीति पर एक नजर डालते हैं। आपको याद होगा, जब आम आदमी पार्टी का गठन होने को था, तब अरविंद केजरीवाल दावा किया करते थे कि उनके पास तमाम राजनेताओं के कच्चे-चिट्ठे हैं। वह मंच से अपने हाथ ऊपर उठाकर फाइल दिखाते, तमाम कथित भ्रष्ट नेताओं के नाम गिनाया करते और लोगों से पूछा करते, क्या इन लोगों को जेल में नहीं रहना चाहिए? विडंबना देखिए, बाद के वर्षों में वह उन्हीं तथाकथित भ्रष्ट नेताओं के हाथों खेलते रहे। नतीजतन, जब शराब घोटाले में इनका नाम उछला, तो लोगों को आश्चर्य नहीं हुआ। अरविंद केजरीवाल की कथित वैकल्पिक राजनीति की सच्चाई लोकसभा चुनाव में भी जाहिर हुई, जब जनता ने उनकी बातों पर भरोसा नहीं किया। इन दिनों तो उनकी छवि एक ऐसे नेता की हो चली थी, जो सिर्फ अपनी कुर्सी बचाने के लिए मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा नहीं दे रहा।

वास्तव में, जेल से सरकार चलाकर अरविंद केजरीवाल ने अपनी रही-सही इज्जत गंवा दी है। अच्छा होता कि वह किसी अन्य नेता पर भरोसा करते, पर वह संविधान की दुहाई देते रहे, जबकि सच यही है कि अगर हमारे संविधान-निर्माताओं को यह इल्म होता कि कालांतर में कोई मुख्यमंत्री अपनी जिद के कारण पद नहीं छोड़ेगा और जेल से सरकार चलाएगा, तो वे जेल जाने से पहले मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री के इस्तीफे संबंधी प्रावधान भी संविधान में जरूर शामिल कर देते। खैर, अब अरविंद केजरीवाल ने इस्तीफा देने का एलान जरूर कर दिया है, लेकिन उनके इतिहास को देखते हुए यह कदम लोगों में शायद ही भरोसा पैदा कर पाएगा। चुनाव से इसकी हकीकत पता चल ही जाएगी।

हृतेश मिश्र, टिप्पणीकार

निर्दोष व्यक्ति को सजा देना न्याय तंत्र की खामी है, तो अपराधी को सजा न देना उससे भी बदतर है। -इमैनुएल कांट

मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल के पहले सौ दिन निश्चित ही एक सशक्त शुरुआत और 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य की ओर बढ़ते कदमों की झलक देते हैं। लेकिन विकास की गति को बनाए रखने के लिए घोषणाओं का जमीनी स्तर पर समुचित अमल भी जरूरी है।

सौ कदम और चुनौतियां

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के तीसरे कार्यकाल के पहले सौ दिन ऐतिहासिक सुधारों और महत्वपूर्ण पहलों के रहे हैं, जिनसे यह स्पष्ट संकेत मिला कि सरकार का ध्यान बड़ी-बड़ी परियोजनाओं पर तो है ही, इस पर भी है कि इनके लाभ समाज के निचले स्तर तक पहुंच सकें। इसकी पहली झलक तब मिली थी, जब नौ जून, 2024 को प्रधानमंत्री मोदी ने तीसरी बार प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ लेने के अगले ही दिन यानी दस जून को प्रधानमंत्री किसान निधि की सत्रहवीं किस्त जारी करने के लिए मंजूरी दी थी। इसके तहत लगभग 20 हजार करोड़ रुपये वितरित किए गए थे, जिससे करीब 9.3 करोड़ किसानों को फायदा मिला। उल्लेखनीय है कि किसानों की जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए सरकार ने डिजिटल कृषि मिशन सहित सात बड़ी योजनाओं को भी मंजूरी दी है। इसके अलावा, 2024-25 के लिए खरीफ फसलों के एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) में वृद्धि किए जाने से करीब 12 करोड़ किसानों को लगभग दो लाख करोड़ रुपये का लाभ हुआ है। लोकसभा चुनाव के दौरान विपक्ष ने बेरोजगारी के मुद्दे पर सरकार को घेरने की कोशिश की थी। ऐसे में, रोजगार विहीन विकास के विपक्ष के आरोपों और नौकरियों को सिर्फ सरकारी नौकरी का पर्याय समझने के विचार को खारिज करते हुए मोदी सरकार के पहले सौ दिनों की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह भी रही कि इस दौरान सालाना एक लाख रुपये से ज्यादा कमाने वाली 11 लाख से ज्यादा लखपति दीदी का भी उदय हुआ। कौशल विकास मिशन के मद्देनजर 4.1 करोड़ युवाओं के लिए दो लाख करोड़ के पैकेज और एक करोड़ युवाओं के लिए 500 कंपनियों में इंटर्नशिप की घोषणाएं भी बेरोजगारी दूर करने के लिहाज से अहम हैं। एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) को मंजूरी देना हो या सत्तर वर्ष से अधिक उम्र के सभी नागरिकों को हर साल पांच लाख रुपये तक के मेडिकल कवर का एलान, मोदी सरकार ने इन ऐतिहासिक घोषणाओं के जरिये देश के

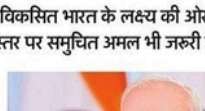

वरिष्ठ नागरिकों के प्रति अपनी फिक्रमंदी ही जाहिर की है। साथ ही वैश्विक युद्धों के संदर्भ में अपने शांति-समर्थक रुख पर अडिग रहकर कूटनीतिक मोर्चे पर भारत ने दुनिया को दिखाया है कि शांति उसकी विदेश नीति की रीढ़ है। पेपर लीक, टैटरल एंट्री या वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक जैसे मुद्दों पर विपक्षी दलों द्वारा सरकार को घेरना अपनी जगह है, लेकिन मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल के पहले सौ दिन निश्चित ही एक सशक्त शुरुआत और 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य की ओर बढ़ने की झलक देते हैं। सरकार ने आर्थिक व सामाजिक सशक्तीकरण के लिए जो घोषणाएं की हैं, उनका उसी भावना से समुचित अमल भी उतना ही जरूरी है।

मृत्युदंड का भी इंतजार

वर्ष 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, जेलों में बंद 561 कैदी ऐसे हैं, जिनकों मृत्यदंड की सजा मिली है। ये आंकड़े ऐसी स्थिति बयान कर रहे हैं, जो न्याय तंत्र की प्रभावशीलता पर सवाल उठा रहे हैं। निश्चित समय सीमा में कैदियों को फांसी न देना भी मानवाधिकार व संविधान प्रदत्त अधिकारों के अनुसार असंगत ही है।

हाल ही में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2023 में मृत्युदंड पाने वाले कैदियों की संख्या बढ़कर 561 हो गई है, जो पिछले 19 वर्षों में सर्वाधिक है। इससे पहले, जेलों पर नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ों के अनुसार, 2004 में मृत्युदंड पाने वाले कैदियों की सबसे ज्यादा संख्या 563 थी। हाल के वर्षों में यह वृद्धि कई कारणों से हो सकती है, जैसे, अपीलीय न्यायालयों द्वारा मामलों के निपटारे की कम दर और सुनवाई अदालतों द्वारा मृत्युदंड देने की बढ़ती प्रवृत्ति आदि। गौरतलब है कि दिल्ली स्थित राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय द्वारा प्रोजेक्ट 39-ए के तहत मृत्युदंड पर वार्षिक रिपोर्ट जारी की जाती है। इसमें उल्लेख है कि 2023 में मृत्युदंड के 120 आदेश दिए गए थे, हालांकि इसमें कमी आई है, क्योंकि 2016 में 156 ऐसे आदेश दिए गए थे।

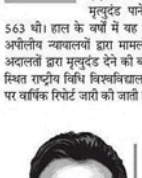

सीवीपी श्रीवास्तव
अध्यक्ष, सेंटर फॉर अप्लाइड रिसर्च इन गवर्नेंस, दिल्ली

वर्ष 2019 के बाद यौन अपराधों से जुड़े मामलों में ट्रायल कोर्ट ने सबसे ज्यादा मौत की सजा के आदेश दिए हैं। वर्ष 2023 में दुष्कर्म और हत्या सहित यौन अपराधों के लिए 64 लोगों (लगभग 53 फीसदी) को मौत की सजा सुनाई गई। यह 2016 में मौत की सजा पाए 27 कैदियों से ज्यादा है। 75 फीसदी मामलों में, अदालतों ने मौत की सजा तब सुनाई, जब मामला 12 साल से कम उम्र की पीड़िता के साथ दुष्कर्म और हत्या से जुड़ा था। पिछले साल भी 2020 के बाद से उच्च न्यायालयों में मौत की सजा की पुष्टि की सबसे कम निपटान दर देखी गई। महत्वपूर्ण बात यह है कि 2000 के बाद से अपीलीय अदालतों द्वारा मौत की सजा की पुष्टि की 2023 में सबसे कम दर दर्ज की गई। रिपोर्ट में कहा गया है, उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों ने जांच प्रक्रिया के प्रभावी नहीं होने और लोगों को दोषी ठहरा कर मौत की सजा सुनाने के लिए ट्रायल कोर्ट द्वारा भरोसेमंद साक्ष्यों की गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता पर गंभीर चिंता जताई है।

रिपोर्ट में दिए गए ये आंकड़े मृत्युदंड के मामलों की ऐसी स्थिति बयान कर रहे हैं, जिसमें न्याय तंत्र की प्रभावशीलता और विश्वसनीयता

पर प्रश्न चिह्न लग रहे हैं। यहां भारत में मृत्युदंड की सांविधानिक स्थिति पर विचार करना समीचीन होगा। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 72 और अनुच्छेद 161 में क्रमशः राष्ट्रपति और राज्यपाल को मृत्युदंड को क्षमा करने की शक्ति दी गई है। ऐसा इसलिए है कि राष्ट्रपति जनता का सर्वोच्च निर्वाचित प्रतिनिधि है, अतः संप्रभु जनता में निहित ऐसी शक्ति का प्रयोग कर सकता है। दूसरी ओर, हरियाणा राज्य बनाम राजकुमार, 2021 मामले में उच्चतम न्यायालय के निर्णय से पहले राज्यपाल मृत्युदंड को क्षमा नहीं कर सकता था, लेकिन इस मामले में न्यायालय ने कहा कि चूंकि राज्यपाल राष्ट्रपति का प्रतिनिधि होने के साथ-साथ राज्य का सांविधानिक प्रधान भी है, अतः दोनों की शक्तियों में कोई विभेद नहीं किया जा सकता।

भारतीय दंड संहिता में धारा 302 के तहत मृत्युदंड का प्रावधान था। वर्तमान में प्रचलित भारतीय न्याय संहिता में भी कई अपराधों में मृत्युदंड का प्रावधान है। जैसे हत्या, 12 वर्ष से कम आयु की बालिकाओं के साथ दुष्कर्म और हत्या आदि। उच्चतम न्यायालय ने समय-समय पर मृत्युदंड की सांविधानिक वैधता के संबंध में निर्णय दिए हैं। भारत में मृत्युदंड को पहली चुनौती जगमोहन सिंह बनाम उत्तर प्रदेश राज्य, 1972 मामले में दी गई थी। न्यायालय ने माना कि मृत्युदंड की सजा परिस्थितियों की विस्तृत जांच और गंभीर मूल्यांकन के बाद दी जाती है, इसलिए ऐसी प्रक्रिया मृत्युदंड के प्रावधान को उचित ठहराती है और भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 का उल्लंघन नहीं करती है। न्यायालय ने यह भी कहा कि यह दंड कई न्यायिक सिद्धांतों पर आधारित है। राजेंद्र प्रसाद बनाम उत्तर प्रदेश राज्य, 1979 मामले में न्यायालय ने प्रतिशोधात्मक सिद्धांत से अलग हटकर सामाजिक लक्ष्यों के रूप में निवारण और सुधारात्मक सिद्धांत पर जोर दिया। इसके अलावा, न्यायालय ने माना कि मृत्युदंड के आदेश के लिए आवश्यक 'विशेष कारण' अपराध से संबंधित नहीं होने चाहिए, बल्कि अपराधी पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।

वर्ष 1980 में बच्चन सिंह बनाम पंजाब राज्य में मृत्युदंड की सांविधानिक वैधता को फिर से चुनौती दी गई। इस मामले में सबसे पहले, आजीवन कारावास और मृत्युदंड के बीच विकल्प वाले अपराधों के लिए आजीवन कारावास देने के नियम के संबंध में मृत्युदंड को अपवाद बना दिया गया था। दूसरे, राजेंद्र प्रसाद बनाम उत्तर प्रदेश राज्य, 1979 के सिद्धांत ने उस आधार की व्याख्या की थी, जिसके आधार पर 'मृत्युदंड' अपराधी की परिस्थिति से संबंधित होना चाहिए, न कि अपराध से। तीसरे, इसने मेनका गांधी बनाम भारत संघ, 1978 के आलोक में मृत्युदंड की समीक्षा की, क्योंकि प्रत्येक दंडात्मक कार्रवाई को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 19 और 21 के स्वर्णिम त्रिभुज परीक्षण को संतुष्ट करने के बाद तर्कसंगतता के परीक्षण को पूरा करना चाहिए। मृत्युदंड के संबंध में बच्चन सिंह मामले के अलावा मारू राम बनाम भारत संघ, 1980 मामले में भी न्यायालय ने कहा कि मृत्युदंड 'दुर्लभ में दुर्लभतम' मामलों में ही दिया जाएगा, अर्थात यह अपवाद स्वरूप ही दिया जाएगा।

सवाल यह है कि आज के समय में, जब अधिकारों के प्रति दिन-प्रतिदिन जागरूकता बढ़ रही है और विशेषकर मानवाधिकारों के संबंध में कई राष्ट्रों ने मृत्युदंड को समाप्त करने पर जोर दिया है, भारत में भी मृत्युदंड की सांविधानिक वैधता पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। प्रत्यक्ष रूप से तो ऐसा दंड मानव अधिकारों के विरुद्ध लगता है, लेकिन कानून को हटाना या उसे इस आधार पर अवैध कहना तर्कसंगत नहीं होगा। देखना यह होगा कि ऐसा दंड किन परिस्थितियों में दिया गया है और यदि परिस्थितियां 'दुर्लभ में दुर्लभतम' हैं, तो मृत्युदंड को तार्किक मानना होगा। लेकिन यदि मामले एक निश्चित समय-सीमा से अधिक समय तक लंबित रहते हैं या ऐसी सजा पाने वाले कैदियों को फांसी नहीं दी जाती, तो ऐसी स्थिति मानव अधिकारों या संविधान के स्वर्णिम त्रिभुज से असंगत मानी जाएगी।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

लियो टॉलस्टॉय

सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य उस व्यक्ति को खुश करना है, जो आपके करीब खड़ा है। आपको अपने जीवन का अर्थ समझना होगा, उसके बाद ही जी पाएंगे। जीवन की अंतिम सच्चाई तो मौत ही है।

सिर्फ वर्तमान क्षण पर ही हमारा प्रभुत्व है

एक यात्री को खूंखार जानवर ने घेर लिया। जानवर से बचकर वह एक सूखे कुएं के पास जाता है और छलांग लगाने के बारे में सोचता है, लेकिन कुएं के अंदर एक अजगर को देखता है, जो उसे निगलने के लिए अपना जबड़ा खोलता है। वह यात्री सोच में पड़ जाता है कि अगर बाहर रहा, तो खूंखार जानवर खा जाएगा और कुएं में कूदा, तो अजगर खा जाएगा। वह कुएं की दरार में उगी एक टहनी को देखता है और उसी को पकड़कर चिपक जाता है। थोड़ी देर बाद वह देखता है कि दो चूहे, एक काला और एक सफेद है, टहनी के चारों ओर चक्कर लगाते हुए उसे कुतर रहे हैं, जिससे वह चिपका हुआ है। अब उसके मन में एक दृश्य बन रहा है कि कुछ समय के बाद टहनी खुद ही टूट जाएगी और अजगर उसे खा जाएगा। वह सोचते हुए उसका ध्यान टहनी की पत्तियों पर जाता है, और वह पत्तियों पर शहद की कुछ बूंदें देखता है। वह अपनी जीभ की मदद से शहद चाटने का प्रयास करता है। उसे शहद अच्छा लगता है, लेकिन वापस से सोचने लग जाता है कि मृत्यु मेरे करीब है। वह समझ नहीं पा रहा है कि इस पीड़ा में क्यों पड़ा है। उसने उस शहद को वापस चखा, लेकिन वह अब बेस्वाद लगने लगा। उसका पूरा ध्यान अजगर और दो चूहों पर चला गया। उसे मौत के डर ने वर्तमान से दूर कर दिया। जीवन के जो पल थे, उन्हें भी उसने बर्बाद कर दिया। इसलिए हमारा वर्तमान क्षण ही एकमात्र ऐसा समय है, जिस पर हमारा प्रभुत्व है। सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति हमेशा वह होता है, जिसके साथ आप हैं, जो आपके ठीक सामने है, क्योंकि कौन जानता है कि भविष्य में आपका किसी अन्य व्यक्ति के साथ व्यवहार होगा या नहीं? सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य उस व्यक्ति को खुश करना है, जो आपके करीब खड़ा है, यही जीवन का लक्ष्य है। आपको जीवन का अर्थ समझना होगा, उसके बाद ही आप जीवन जी पाएंगे, क्योंकि ज्ञान का हर कदम आपको सच्चाई की ओर ले जाता है। अंतिम सच्चाई तो मौत ही है।

हम और आप आमतौर पर किसी व्यक्ति से मिलते ही उसे विशेष तरीके से परिभाषित करते हैं-दयालु, दुष्ट, मूर्ख, ऊर्जावान, उदासीन इत्यादि। लेकिन असल में लोग ऐसे नहीं होते हैं। हर व्यक्ति अक्सर क्रूर से ज्यादा दयालु होता है, और अक्सर मूर्ख से ज्यादा बुद्धिमान होता है, अक्सर उदासीन से ज्यादा ऊर्जावान होता है या बिल्कुल इसके विपरीत। लेकिन यह कभी नहीं हो सकता है कि एक व्यक्ति दयालु या बुद्धिमान है। मनुष्य नदियों की तरह हैं, उन सभी में पानी एक जैसा है, लेकिन हर नदी कहीं संकरी है, तो कहीं तेज बहती है, कहीं चौड़ी है, तो कहीं शांत, साफ, ठंडी, मैली या गर्म है। ऐसा ही मनुष्यों के साथ होता है। समाज में हम अक्सर एक-दूसरे पर आरोप थोपते रहते हैं। हर कोई दुनिया को बदलने के बारे में सोचता है, लेकिन कोई भी खुद को बदलने के बारे में नहीं सोचता। पहले खुद बदलें, फिर दूसरों को बदलने के बारे में सोचें।

निश्चित उद्देश्य रखें

सूत्र

जीवन सेवा का स्थान है। सेवा करने में व्यक्ति को बहुत कष्ट भी सहने पड़ते हैं, लेकिन उससे आनंद भी बहुत मिलता है। वह आनंद तभी वास्तविक हो सकता है, जब लोग अपने जीवन को एक सेवा के रूप में देखें और जीवन में खुद और अपने व्यक्तिगत सुख के अलावा एक निश्चित उद्देश्य रखें।

दूसरा पहलू

दुर्लभ फूलों के पौधों को खोजने और बचाने में जुटे कार्लोस मैग्डालेना अपने जीवन की भी परवाह नहीं करते।

मगरमच्छों से नहीं डरते लोग कहते हैं 'मसीहा'

वह ऑस्ट्रेलिया में वाटर लिली को देखने के लिए हेलिकॉप्टर से मगरमच्छों से भरे हुए पानी में उतरे। मॉरीशस में उन्होंने चट्टटान किनारे से एक पौधे का नमूना उठाया था। पिछले महीने वह ओरिनोको नदी की कोलंबियाई सहायक नदी में लिली की तलाश में सुबह चार बजे तैरते हुए पौधे के पुल तक पहुंचने के लिए अंधेरे में एक तख्त से दूसरे तख्त पर कूद गए। लंदन में रॉयल बॉटेनिक गार्डन, क्यू के बागवानी विशेषज्ञ कार्लोस मैग्डालेना ने कहा, 'ऐसा नहीं है कि मैं इतना साहसी हूं। कभी-कभी ऐसी परिस्थितियां निर्मित हो जाती हैं।'

सिलवाना पैटरनोस्ट्रो
रॉयल बॉटेनिक गार्डन के बागवानी विशेषज्ञ ने कहा, 'ऐसा नहीं है कि मैं इतना साहसी हूं। कभी-कभी ऐसी परिस्थितियां निर्मित हो जाती हैं।'

क्यू गार्डन में उष्णकटिबंधीय पौधों की देखभाल की मुख्य जिम्मेदारी मैग्डालेना के पास ही है। लेकिन वह 'पौधों के मसीहा' के नाम से जाने जाते हैं। यह नाम 2010 में एक स्पेन समाचार पत्र ने उन्हें पौधों की विलुप्त होती विभिन्न प्रजातियों को बचाने के लिए दिया था। उनके इस काम ने उन्हें वनस्पति जगत में काफी सम्मान दिलाया और वह बागवानी की दुनिया की मशहूर हस्ती बन गए। उनकी प्रसिद्धि वर्ष 2012 में तब भी बढ़ी, जब प्रकृति वृत्तचित्रों के ब्रिटिश विशेषज्ञ डेविड एटनबरो ने एक फिल्म के प्रीमियर में 'पादप मसीहा' टैगलाइन दोहराई, जिसमें मिस्टर मैग्डालेना को पिगी लिली का प्रचार करते हुए दिखाया गया था। इससे मैग्डालेना शुरू में निराश हुए, लेकिन पिगी लिली ने उन्हें चर्चा में ला दिया।

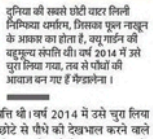

दुनिया की सबसे छोटी वाटर लिली निम्फिया वर्माग्रम, जिसका फूल नाखून के आकार का होता है, क्यू गार्डन की बहुमूल्य संपत्ति थी। वर्ष 2014 में उसे चुरा लिया गया, तब से पौधों की आवाज बन गए हैं मैग्डालेना।

दुनिया की सबसे छोटी वाटर लिली निम्फिया वर्माग्रम, जिसका फूल नाखून के आकार का होता है, क्यू गार्डन की बहुमूल्य संपत्ति थी। वर्ष 2014 में उसे चुरा लिया गया, लेकिन चोर कभी पकड़ा नहीं गया। उस छोटे से पौधे की देखभाल करने वाले मैग्डालेना ने मीडिया को रखांडा मूल के उस दुर्लभ फूल के बारे में बताया था। इसके बाद से वह वनस्पतियों के एक बड़े पैरोकार बन गए। उन्होंने कहा कि पौधे कभी बोलते या रोते नहीं हैं, इसलिए मैंने उनके लिए बोलने का संकल्प लिया है।

अपने माता-पिता की पांच संतानों में सबसे छोटे मैग्डालेना उदासीन छात्र थे, लेकिन आठ वर्ष की उम्र में ही उन्होंने माता-पिता के बागवानी विश्वकोश को 12 बार पढ़ लिया था। उनकी मां फूल उगाती थीं और खेती करना उनके पिता का शौक था। प्रकृति की निकटता उन्हें विरासत में मिली है। मैग्डालेना के अनुसार, करीब एक लाख से अधिक पौधों की प्रजातियां खतरे में हैं।

©The New York Times 2024

आंकड़े

कृषि में मशीन

भारत में कृषि कार्यों में धीरे-धीरे मशीनों का उपयोग बढ़ रहा है। लेकिन हम अब भी प्रमुख देशों से मशीनीकरण में पीछे हैं।

अमेरिका व यूरोप	95%
रूस	80%
ब्राजील	75%
चीन	48%
भारत	40%

आंकड़े मशीनीकरण के उपयोग के, प्रतिरत्न में

स्रोत : RBI

भगवान राम के कहने पर भोलेनाथ जब पार्वती जी से विवाह करने को तैयार हुए, तो उन्होंने पार्वती जी के प्रेम की परीक्षा लेने के लिए सप्तऋषियों को भेजा।

सप्तऋषियों ने ली पार्वती की परीक्षा

अंतर्यात्रा
संकलित

माता पार्वती भगवान शिव को पाने के लिए कठोर तपस्या कर रही थीं। इधर भोलेनाथ राम नाम में मग्न होकर घूम रहे थे। भगवान राम ने शंकर जी को दर्शन देकर कहा कि पार्वती जी आपके लिए कठोर तप कर रही हैं। आपको अब उनसे शीघ्र विवाह कर लेना चाहिए।

शंकर जी ने कहा कि माता-पिता और गुरु की आज्ञा तो बिना किसी विचार के ही मान लेनी चाहिए। आप तो मेरे आराध्य हैं। इसके बाद भगवान राम अंतर्धान हो गए और शंकर जी आगे बढ़ गए। उन्हें रास्ते में सप्तऋषि मिले। शंकर जी ने सप्तऋषियों से कहा कि आप जाकर पार्वती जी के प्रेम की परीक्षा लीजिए। सप्तऋषि माता पार्वती के पास पहुंचे और कहा कि आप जिन नारद जी की बात मानकर तपस्या कर रही हैं, उनकी बात मानकर, तो आज तक किसी का भी घर नहीं बसा है। इसके साथ ही सप्तऋषियों ने कहा कि आप जिन शंकर के लिए घोर तप कर रही हैं, उनके पास कुछ भी नहीं है। वह तो कंगाल हैं। वह खुद भीख मांगकर अपना निर्वाह करते हैं। तुम्हारा भरण-पोषण कैसे होगा? नारद जी और भगवान भोलेनाथ की निंदा, सुनने के बाद पार्वती जी ने सप्तऋषियों से कहा कि मेरे गुरु (नारद) ने जो उपदेश दिया है, अब उससे पीछे नहीं हटूंगी।

नारद बचन न मैं परिहरऊं। बसउ भवनु उजरउ नहिं डरउं॥ गुर के बचन प्रतीति न जेही। सपनेहुं सुगम न सुख सिधि तेही॥

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 06 फरवरी, 1959

मैकमिलन रूसी नेताओं से मिलने मास्को जाएंगे

श्रीमेकमिलन रूसी नेताओं से मिलने मास्को जायेंगे

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री हैरॉल्ड मैकमिलन विदेश मंत्री लॉयड के साथ इसी माह मास्को जा रहे हैं, जहां वह रूसी नेताओं से शिखर सम्मेलन के बारे में वार्ता करेंगे, ताकि युद्धप्रिय देशों में समझौता हो जाए।

सुलझाने के बजाय उलझा रही तकनीक

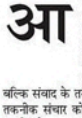

तकनीक जब हमारे संचार के हर पहलू को नियंत्रित करती है, तब मानवीय संवेदनाएं, आवाज की गर्माहट और भाव सब गायब हो जाते हैं।

मुकुल श्रीवास्तव — मुद्दा

आज के डिजिटल युग में तकनीक ने हमारी रोजमर्रा की जिंदगी को पूरी तरह बदल दिया है। इंटरनेट, एप और एआई जैसी तकनीकों ने न केवल हमारे कामकाज को अधिक सुविधाजनक और तेज बना दिया है, बल्कि संवाद के तरीकों को भी बदल दिया है। एक ओर तकनीक संचार को त्वरित और सुलभ बना रही है, तो दूसरी ओर इसका प्रभाव मानवीयता पर भी पड़ा है। संचार में मानवीय भावनाएं, आवाज की गर्माहट और चेहरों के भाव धीरे-धीरे गायब होते जा रहे हैं, जो समस्याओं को सुलझाने के बजाय और बिगाड़ रहे हैं।

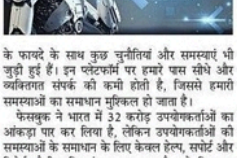

सोशल नेटवर्किंग साइट्स हों या ऑनलाइन कंपनियां, ये हमारे जीवन का आज अहम हिस्सा बन गई हैं। चाहे अमेजन जैसे ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म से सामान मंगाना हो या ऊबर, ओला जैसी कैब सर्विस से कहीं जाना। इन एप आधारित कंपनियों ने हमारे रोजाना के कामों को सरल और सुविधाजनक बना दिया है। मगर इसका एक और पहलू भी है, इन तकनीकों और ऑनलाइन सेवाओं के फायदे के साथ कुछ चुनौतियां और समस्याएं भी जुड़ी हुई हैं। इन प्लेटफॉर्म पर हमारे पास सीधे और व्यक्तिगत संपर्क की कमी होती है, जिससे हमारी समस्याओं का समाधान मुश्किल हो जाता है।

फेसबुक ने भारत में 32 करोड़ उपयोगकर्ताओं का आंकड़ा पार कर लिया है, लेकिन उपयोगकर्ताओं की समस्याओं के समाधान के लिए केवल हेल्प, सपोर्ट और रिपोर्ट जैसी सुविधाएं प्रदान करता है, जो कि एक पूर्वनिर्धारित एकतरफा तंत्र के अलावा कुछ भी नहीं है। यह स्थिति दर्शाती है कि कैसे तकनीकी सुविधाएं हमारे समस्या समाधान की प्रक्रिया को जटिल बना सकती हैं और मानवीय संबंधों को एक तंत्र में बदल सकती हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप अमेजन या फ्लिपकार्ट से कोई उत्पाद खरीदते हैं और वह खराब निकलता है, तो आपको अक्सर चैटबॉट से ही मदद मिलती है। वास्तविक उपभोक्ता सेवा प्रतिनिधि से संपर्क करने के लिए घंटों इंतजार करना पड़ता है। अगर फूड डिलीवरी एप पर आपके ऑर्डर में खराब या गलत भोजन आता है, तो आपको स्वचालित सपोर्ट और लंबे इंतजार का सामना करना पड़ता है। सीसीडब्ल्यू डिजिटल और कस्टमर मैनेजमेंट सर्विस के अध्ययन में बताया गया है कि 55 फीसदी उपभोक्ताओं का अनुभव चैट-बेस्ड सपोर्ट में बदतर रहा है यानी स्वचालित सहायता तंत्र अक्सर मानवीय समाधान की कमी को पूरा नहीं करता।

तकनीक ने ग्राहक सेवा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। ग्लोबल स्ट्रैटजिक विज रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2023 तक विश्व भर का कॉल सेंटर बाजार 332 अरब डॉलर का था, जिसमें भारत की हिस्सेदारी करीब दस प्रतिशत है। नैसकॉम के मुताबिक, भारत में पांच करोड़ लोग इन बीपीओ और कॉल सेंटरों से रोजगार प्राप्त करते हैं। बड़ी कंपनियों ने ग्राहक सेवा में वेटिंग टाइम को कम करने के लिए लाइव चैट का विकल्प दिया, जिसमें ग्राहकों को अपनी समस्याएं लिख कर देने के लिए प्रेरित किया जाने लगा। और धीरे-धीरे मौखिक संचार को कम कर कंपनियों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता चैटबॉट्स को तरजीह देनी शुरू कर दी, इससे कंपनियों का ग्राहक सेवा पर खर्च कम हुआ है। इस वजह से कंपनियों ने कॉल सेंटर प्रतिनिधियों की संख्या घटाना शुरू कर दिया है। विशेषज्ञ मानते हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव से कॉल सेंटरों का अस्तित्व खतरे में है। कैपेन एशिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक, मई 2023 में इंडियन एयरलाइंस के चैटबॉट 'महाराजा' ने 93 प्रतिशत ग्राहकों के सवालों का समाधान बिना कॉल सेंटर प्रतिनिधि के पास भेजे किया है।

कंपनियों में लागत कम करने के लिए यह आसान तरीका है, ताकि लोगों की कॉल सेंटरों पर निर्भरता कम की जा सके। मगर कई एप कॉल हेल्पलाइन की लिंक तक पहुंचने की प्रक्रिया को इतना जटिल बना देते हैं कि ग्राहकों को मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है। न्यू यॉर्क मीडिया द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, खराब ग्राहक सेवा के कारण हर साल करीब 75 अरब डॉलर के व्यापार की हानि होती है। जिनमें कॉल सेंटरों और खराब सहायता तंत्र भी एक अहम कारण होते हैं।

तकनीक के अंधाधुंध प्रयोग से मानवीय संवाद का स्थान एक निर्जीव तंत्र ने ले लिया है, जहां अब समस्याओं का समाधान मशीनों और बिना मौखिक संवाद के द्वारा किया जाता है। वहीं यह सिर्फ व्यापार और ग्राहक सेवा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसका असर हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों पर भी पड़ रहा है। तकनीक जब हमारे संचार के हर पहलू को नियंत्रित करती है, तो हम अपनी मानवीय संवेदनाओं से दूर होते जाते हैं। अंत में हमें इस बात पर विचार करना होगा कि तकनीक हमारे जीवन को जितना आसान बना रही है, उतना ही हमें मानवीय मूल्यों से दूर कर रही है। यह एक महत्वपूर्ण समय है, जब हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि तकनीक हमें उलझाने के बजाय हमारे जीवन को सुगम बनाए।